पुस्तक
दादा-गुरु-पूजा-संपुट

उपदेशक
पू० सुप्रसिद्ध जैन मुनि
श्री महिमाप्रभ सागर जी

रचयिता
विविध कवि-रत्न

संशोधक
पू० मुनि श्री ललितप्रभ सागर जी

संस्करण
अगस्त, १९८२

आवृत्ति
१०,००० (दस हजार)

मूल्य
नित्य भक्ति पूजन

पृष्ठ
१६२

प्रकाशक
महिमा ललित साहित्य प्रकाशन
बायेती चौक, बीकानेर (राजस्थान)

मुद्रक
जूपीटर ऑफसेट प्रेस
दिल्ली-३२

श्री सद्गुरुभ्यो नम

प्रस्तुत पुस्तक | अन्तर् दर्शन

मानव-मानस विभिन्न भावों का अक्षय कोष है और गुरु-भक्ति उसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाव है। मानव प्राण में गुरु-भक्ति की भावना अनादिकाल से ही उसके हृदय की धड़कन और अजस्र प्रवहमान रक्त की लालिमा बनकर जीवित हैं।

गुरु; जो पथ-भ्रष्ट का पथ-प्रदर्शन करते हैं और उन्मार्ग प्रवृत्त को सन्मार्ग पर लाते हैं। भक्ति; जो हमारे जीवन-पथ को आलोकित करने वाली एक सुन्दर आलोक-शिखा (टार्च) हैं—यह गुरु-भक्ति-सुमन जीवन के रोम-रोम में प्रस्फुटित हों तो हम पतन के घनीभूत अन्धकार से आच्छादित कूप में गिरने से बचकर प्रोन्नति के अच्युत चरम शिखर पर पहुँचने में शक्य हो सकते हैं।

दादा-गुरु के प्रति नि सृत स्तवक की तरह चुना हुआ अनवरत गतिमान श्रद्धान्वित सुन्दर शब्द-गुलदस्ता जो कुछेक भक्त कवियों के चित्त की अतल गहराइयों से प्रवहमान हैं; मुद्रित रूप में आपके कर-कमल में उपलब्ध हैं। जिसमें उन कवि श्री के चिन्तन के गाम्भीर्य के साथ जीवन का सारल्य व गीत के ओज के साथ चित्त का माधुर्य समाहित हैं। ऐसे भक्ति-कवि—जिन्होंने निगम और आगम तथा धर्म और लोक का साक्षात्कार किया है। ऐसे दादा-गुरु जिन्होंने लक्षाधिक व्यक्तियों का चरित्र निर्माण किया है व अपने आत्म-बल, योग-बल, तपो-बल से भारतीय संस्कृति के उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और ऐसे

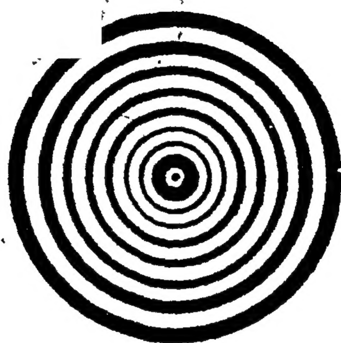
श्रद्धेय मुनिश्री—जिनकी असीम अनुकम्पा व विशुद्ध प्रेरणा से यह दादा-भक्ति-पूजा संपुट आत्मोर्ध्वीकरण के निमित्त अर्वाचीन समाज को संप्राप्त हुआ।

ऐसी महात्माओं को शत्-शत् नमन।

जैन पौशाल,
2936, कटरा खुशहाल राय,

—मुनि चन्द्रप्रभ सागर

श्री दादागुरुभ्यो नम :



खरतरगच्छाचार्य

श्री मज्जिन हरिसागर सूरीश्वर

विरचित

श्रीदादा गुरुदेवों की ४ पूजायें

ॐ अर्हं नमः

॥ श्री सुखसागर-भगवज्जिनहरि-पूज्य-परमगुरुभ्यो नमो नमः॥

प्रथम दादा गुरु देव—

श्रीजिनदत्त सूरिश्वर-पूजा

* श्री गुरुपद स्थापना *

(शार्दूल विक्रीडितम्)

ॐ अर्हं जिनदत्तसूरिगुरो ! निष्पाप-बोधोद्धुरो-
दाराचार- विचार-सार - पदवी - संपादक - श्रीगुरो ! ।
स्फूर्जत्सत्य- सुखोदधे ! सुभगवत्भव्यात्म सच्चिन्निधे !
भूपीठे हरिपूज्य ! देव ! दयया स्वीयावतारं कुरु ॥

❀ आह्वान मन्त्र ❀

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीजिनदत्त-सूरि-सुगुरो ! अत्रावतरावतर स्वाहा ॥

❀ स्थापना मन्त्र ❀

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीजिनदत्त-सूरि-सुगुरो । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा ॥

॥ सन्निधिकरण मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीजिनदत्त-सूरि-सुगुरो ! मम सन्निहितो भव वषट् स्वाहा ॥

१---जल पूजा

दूहा—

ॐ अर्हं ध्याउं धुरे, सहज समाधि निदान ।
श्रीगुरुपद पूजा रचूं, प्रकटे गुरुपद ज्ञान ॥ १ ॥
गुण-गुरु गुरु सेवा सदा, मन-मेवा दातार ।
मन-वच-काया से करूं, गुरु सेवा सुखकार ॥ २ ॥
जिन शासन वर भवन में, दृढ़तर थम्भ समान ।
खरतर विधि पालक हुए, गुरु-गुण-ज्ञान-निधान ॥ ३ ॥
श्रीजिनदत्त शिरोमणि, गुरु-पदधारी सार ।
पूजनतें प्रकटे सही, गुरुपद-गुण-भंडार ॥ ४ ॥
आतम उज्ज्वल वस्त्रपे, लगा करम-मल-कीच ।
निर्मलता हित धोइयें, गुरु-सेवा-जल बीच ॥ ५ ॥
पूज्य-पुरुष-पूजन किये, प्रकटे पूज्य स्वभाव ।
यातें पूजन कीजिये, भविजन द्रव्यऽरुभाव ॥ ६ ॥
जल-चन्दन अरु पुष्प-वर, धूप सुगन्धित वास ।
दीपाक्षत नैवेद्य फल, पूजा करूं प्रकाश ॥ ७ ॥

(तर्ज—चिन्ता चूर चिन्तामणि पास प्रभु०)

गुरुदेव की सेव सदैव करो,
निज पुण्य परम भण्डार भरो ॥ टेर ॥

जो भर सुगन्धित जल कलश, गुरु चरण कज प्रक्षालते ।
कर्म के सब पाप मल वे, दूर ही तें टालते ॥
निज रूप अनूप करो उजरो । गुरु० ॥ १ ॥

प्रभु वीर शासन में हुए, श्री गौतमादिक गुरुवरा ।
संसार में जिनका विमलतर, ध्यान है मंगलधरा ॥
नित ध्यान करो सब पाप हरो । गुरु० ॥२॥

कुछ मध्य में अति हीन काल, प्रभावतें अति हीनता ।
होने लगी थी साधुओं में, चैत्यवास मलीनता ॥
यही आज कहे इतिहास खरो । गुरु० ॥३॥

श्री वर्द्धमानाचार्यपद, सूरि जिनेश्वर सूर्य से ।
उस तिमिर पूरित काल में, चमके सुखरतर कार्य से ॥
उनके सत्य प्रकाश का बोध करो । गुरु० ॥४॥

फिर सिंहनाद सुवाद भी, सूरि जिनेश्वरने किया ।
मृग चैत्यवासी भग गये, खरतर विरुद दुर्लभ दिया ॥
उसी सुविहित पथमें भवी विचरो । गुरु०॥५॥

दोष-लांछन रहित उनके, शांत कांति हुए सुधी।
जिनचन्द्रसूरि चन्द्र से, संवेग रंग सुधानिधि॥
उनकी सुविधि सुधा का पान करो। गुरु॥६॥

पट्ट उनके धीर निर्भय, अभयदेवाचार्य वर।
नव अंग टीकाकार तीरथ, पास थंभण प्रकट कर॥
उनके शरण अभय वरदान वरो। गुरु० ॥७॥

उनके विशद पद गगन में, रवि सम तमो नाशक महा।
कवि वीर जिनवल्लभ सुजस, जिनका जगत में हो रहा॥
उनका सुजश सदा मुख से उच्चरो। गुरु ॥८॥

पाखण्ड खण्डन के लिये, सामर्थ्य जो पूरा धरें।
हैं संघपट्टक आदि जिनके, ग्रन्थ तत्वों से भरे॥
पढ के तत्त्वरमणता, नित्य करो। गुरु० ॥९॥

प्रख्यात उनके आज भी, जिनदत्तसूरि राज हैं।
अतिशय भरे अवदातमय, जो भव्यजन सरताज हैं॥
दादा नाम सुपावन याद करो। गुरु ॥१०॥

दादा गुरु सुख सिन्धु हैं, भगवान हैं आधार हैं।
गुरु के चरण प्रक्षालते, "हरि" होत भव जल, पार हैं॥
यातें प्रथम विमलजल पूजा करो। गुरु० ॥११॥

॥ श्लोक ॥

सत्यामृताय सरसात्मपदाय मूलात्-
तृष्णादि-दोष दलनाय मलक्षयाय।
तत्तद्गुणेन विमलेन जलेन भक्त्या,
दादोपसंज्ञ जिनदत्तगुरुं यजेऽहम् ॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परमगुरु देवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय जलं यजामहे स्वाहा ॥

२—चन्दन पूजा

दूहा

श्रीगुरु चन्दन वृक्षतें, त्रिविध ताप मिट जाय।
यातें चन्दन पूजना, करो सदा सुखदाय ॥

तर्ज—जिनधर्म का डंका आलम में बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने

मिथ्यात्व कुवास को दूर किया,
दादगुरु दत्तसूरीश्वर ने।
जिनधर्म सुवास विशेष यहाँ,
फैला दिया दत्तसूरीश्वर ने ॥ टेर ॥

जब धर्म के नाम यहां भारी,
पाखण्ड जमाया जाता था ।
निर्भय हो उसको दूर किया,
तब युगवर दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या०॥१॥

जब रातमें वेश्याएँ नाटक,
जिन मन्दिर में नित करतीं थीं ।
अविधि-विधि भेद प्रकाश किया,
तब श्रीजिन दत्तसूरीश्वर ने ॥मिथ्या०॥२॥

जब झूँठे गच्छ कदाग्रह में,
गृही गण को फांदा जाता था ।
जिन शासन का सच्चा पथ तब,
दिखला दिया दत्तसूरीश्वर ने ॥मिथ्या०॥३॥

जिन मन्दिर में गद्दी अपनी,
मुनिनाम धारी जब रखते थे ।
मन्दिर-यति धर्म स्वरूप तभी,
समझाया दत्तसूरीश्वर ने ॥मिथ्या० ॥४॥

निर्गुण दुष्कुल में जन्मे को,
स्वारथहित द्रव्य को देकर के ।

वैसे गुरु शिष्य बनाते थे,
छुड़वाया दत्तसूरीश्वर ने ॥मिथ्या० ॥५॥
जब विषय कषायाधीन हुए,
मुनि देव द्रव्य को खाते थे,
उसका भी खण्डन खूब किया,
संयमी गुरु दत्तसूरीश्वर ने ॥मिथ्या०॥६॥
सुखसागर वे भगवान बनें,
त्रिभुवन में उनका यश पसरे।
सुविहित आचार को पालें जो,
फरमा दिया दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या०॥७॥
दुर्जन विषधर का ताप नहीं,
होगा चन्दन पूजा रचते।
"हरि" पूज्य हुए पूजा करते,
उपदेशा दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥८॥

॥ श्लोक ॥

दुःखोपताप हरणाय महद्गुणाय,
यद्वा द्विजिह्व कृतदोपनिवारणाय।
सच्चन्दन-प्रवर-पुण्यरसेन श्रीमद्-
दादोपमंज्ञजिनदत्तगुरु यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

३—पुष्प पूजा

दूहा—

सुमनस् सद्गुरु सेवना, सुमनस् शिवको देत ।
सुमनस् भविजन कीजिये, सुमनस्-पद संकेत ॥

(तर्ज—मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाऊँगा)

श्रीगुरु सुमनस् सेवना, नित कीजें विविध प्रकार ।
हैं जिनदत्त सूरीश्वरु, गुरु सुमनस् शिव दातार ॥टेर॥

ग्यारहसौ बत्तीस में, धवलक्कानगर मझार ।
हुम्बड़कुल आकाशमें, जो प्रकटे शुभ दिनकार ॥
श्री गुरु सुमनस् ॥१॥

वाछिगसा मन्त्री श्रीमती, वाहड़दे गुण भण्डार ।
धन्य धन्य जगमें हुए जसु, मात-पिता जयकार ॥
श्री गुरु सुमनस् ॥२॥

श्रीधर्मदेव पाठक से दीक्षा, शिक्षा लेकर सार ।
लघुवय इकतालीसमें, हुए सोमचन्द्र अनगार ॥
श्री गुरु सुमनस् ॥३॥

उपस्थापना वाचना, गुरुमन्त्र विशेष प्रकार।
दें अशोकचन्द्र हरिसिंह वर आचार्य विशुद्धाचार॥
श्री गुरु सुमनस् ॥४॥

जब स्वर्ग सिधारे श्रीगुरु-जिनवल्लभ जगदाधार।
श्रीदेवभद्र आचार्य ने, तब करके खूब विचार॥
श्री गुरु सुमनस् ॥५॥

युगप्रधान पद योग्य हैं, श्रीसोमचन्द्र अनगार।
जान यही उनका किया सूरिपद का संस्कार॥
श्री गुरु सुमनस् ॥६॥

नामकरण जिनदत्त सूरि, सद्‌गुण के अनुसार।
जपते दुख दूरे टले, सुख होवे अपरम्पार॥
श्री गुरु सुमनस् ॥ ७ ॥

गुरु सुमनस् सौरभका हुआ, तिहुँ लोकमें पुनितप्रचार।
गुरु सुमनस् पूजा कीजियें, 'हरि' सुमनस् हो नरनार॥
श्री गुरु सुमनस् ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

सत्सौरभाय सुकुमार गुणाय दीव्यद्-
रूपाय कान्त सुमनः पद दर्शनाय।

प्रेङ्खत्सुगन्धसुमनोभिरभिष्ठदेवं
दादोपसंज्ञजिनदत्तगुरुं यजेऽहम् ॥

मन्त्र —

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

४—धूप पूजा

दूहा—

सद्गुरु पूजो धूप से, वरते मंगल माल ।
काल अनादि कुवासना, दूर करें तत्काल ॥

(तर्ज—जमुनाजी में खेले हरि रामलला)

दादागुरु पूजो धूप धरी,
दुर्गन्ध अनादिकी जाय टरी ।
दादागुरु पूजो धूप धरी ॥ टेर ॥

जिनदत्तगुरु आचार्य हुए,
जिनवल्लभ सद्गुरु पाटवरी ॥ दादा० ॥

भविजन सुखिये जय जय उच्चरें,
गुरु देशना अमृत पान करी ॥ दादा गु०॥१॥

जिनशेखर पर उपकार किया,

उसके अपराध सभी विसरी ॥ दादा० ॥

मरुधर में प्रथम विहार किया,

विधि की वर ज्योति तभी पसरी ॥दादा०२॥

धनदेव को सद्‌गुरु बोध करें,

आगम विधि रीति विशेष करी ॥ दादा० ॥

अजमेर में अर्णोराज नमें,

मन्दिर हित भूमिदान करी ॥ दादा० ३ ॥

पावनगुरु वागड़ देश करें,

भविजन मानें आनन्द घरी ॥ दादा० ॥

गुरु सन्मुख सविनय भाव भरे,

समकित सह विरति को उचरी ॥दादा०४॥

जयदेव-सूरि उपसम्पद लें,

गुरु वसतिविधि उन चित्त ठरी ॥ दादा० ॥

निज चैत्यवास जिनप्रभ छोड़ें,

दिनदत्त परम गुरु चरण परी ॥दादा गु०५॥

महिमा मुख से नहीं जाय कही,

महिमा मही-मण्डल खूब भरी ॥ दादा० ॥



ज० यु० प्र० भ० दादा गुरुदेव श्री जिन दत्त सुरीश्वर जी म० सा०



गुरु गुण महिमा जो भवि गावें,

सुख सम्पति उनकी सहचरी ॥ दादा० ६ ॥

गुरु सन्मुख धूप सुगन्धी धरो,

सब पाप पुंज तब जाय जरी ॥ दादा० ॥

सुखसागर गुरु भगवान भजो,

गुण गाव सुर "गणनाथ हरि" ॥दादा०७॥

॥ श्लोक ॥

सर्वायोद्धर्व सिद्धिगतये सततं सदाशा-

सम्पूर्त्तये परिमलोत्तमकीर्तयेऽपि ।

दुर्गन्धदोपहतये वर-धूप-गन्धै-

र्दादोपमंज - जिनदत्तगुरुं यजेऽहम् ॥

मन्त्र —

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा ॥

५—दीपक पूजा ।

दूहा—

गुरु दीपक पूजा करो, प्रकटे परम प्रकाश ।

दीपक गुण विस्तारतें, हृदय तिमिर हो नाश ॥

(तर्ज—प्रभु धर्मनाथ मोहे प्यारा, जगजीवन मोहन गारा)

❀ राग बनजारा ❀

पूजो पूजो परम गुरु प्यारे,
जिनदत्त जगत रखवारे ॥ टेर ॥

अम्बा अक्षर लिख देती, नागदेव को श्रीमुख कहेती।
जो बांचे गुण अनुसारे, सो युगवर पद गुण धारे ॥
पूजो पूजो परम गुरु०॥ १ ॥

जब कोई नहीं पढ़ पाया, तब श्रीगुरु को दिखलाया।
निज वास चूर्ण गुरु डारे, पढ़ चेला वचन उचारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ २ ॥

जय जय जिनदत्त प्रधाना, मरुधर में कल्प समाना।
सुर सेवक सेवा सारें, सब दुःख दुर्गति को वारें ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ३ ॥

गोहिल-डांभी अन्याये, मरुवासी जब दुःख पाये।
जशा-पोकर विप्र विचारे, तब श्रीगुरुशरण सिधारे ॥
पूजो परम गुरु० ॥ ४ ॥

गुरु ने फरमाया जाओ, राजा राठोड़ बनाओ।
नीति बल - गुण - आकारे, सींहोजी दुख विदारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ५ ॥

सींहोजी कनोज से आवें, श्रीगुरु को शीश नमावें।
गुरु दे आशीष अपारे, घूरें तव विजय नगारे॥
पूजो २ परम गुरु०॥ ६ ॥
पाली में जंग जमावें, सींहोजी बल दिखलावें।
गोहिल डांभी सब हारें, राठोड़ विजय विस्तारें॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ७ ॥
सींहोजी अव्याबाधे, नवकोटी मरुधर साधे।
गुरु दीपक के उजियारे, अन्धेर सुदूर निवारे॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ८ ॥
सन्तान जो मेरे होंगे, गुरु खरतर उनके होंगे।
सींहोजी प्रतिज्ञा धारें, गुरु पूजें विविध प्रकारे॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ९ ॥
गुरु सुखसागर भगवाना, सेवो भवी भव्यविधाना।
सुर"गणनायक हरि" हारे,गुण-कीरति वचन विचारे॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

पुण्यत्तमोभर—निवारण कारणाय
ज्योतिः प्रदीप्त परमोज्ज्वल सद्गुणाय

दिव्य प्रदीप करणेन सुभक्ति युक्तो
दादोपसंज्ञजिनदत्तगुरुं यजेऽहम्

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय दीपं यजामहे स्वाहा ॥

६—अक्षत पूजा

दूहा—

उज्ज्वल अक्षत श्रीगुरु, पूरो अक्षत धार।
उज्ज्वल अक्षत पद मिले, रहे न एक विकार॥

(तर्ज—आधार मेरे प्यारे पारस प्रभु हैं आधार)

अपार मेरे प्यारे, महिमा गुरु की अपार ॥ टेर ॥
दादागुरु जिनदत्त अकारण—
बन्धु भवसिंधु आधार। आधार मेरे प्यारे म० ॥१॥
अभक्ष्य त्यागी सुलतान सुत को।
जीवन दान दातार। दातार मेरे प्यारे म० ॥२॥
बिजली गिरी उसे पात्रे में रोकी।
प्रतिक्रमण के मझार। मझार मेरे प्यारे म० ॥३॥

दत्त सुनाम के जाप जपे ते।
बिजली न करती संहार। संहार मेरे प्यारे म० ॥ ४ ॥
वज्रथंभ से विद्या की पुस्तक।
की योगबल से स्वीकार। स्वीकार मेरे प्यारे म० ॥ ५ ॥
पंच नदी पर पीर उपद्रव।
करने पे पाये थे हार। हार मेरे प्यारे म० ॥ ६ ॥
रहते गुरु की खिदमतमें हाजिर।
गुलाम जैसे हरबार। बार मेरे प्यारे म० ॥ ७ ॥
सात दिये बरदान विनय से।
दादा गुरु को उदार। उदार मेरे प्यारे म० ॥ ८ ॥
भूत प्रेत ग्रह-व्यन्तर-मारी।
होंगे न पीड़ा प्रचार। प्रचार मेरे प्यारे म० ॥ ९ ॥
अक्षत विधि गुरु पूजा करो "हरि"।
पूज्य बनोगे संसार। संसार मेरे प्यारे म० ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

नित्याक्षत प्रकट सौख्यपदाय चंचच्
चन्द्रोज्ज्वलाद्भुत गुणोतम सौरभाय।
पुण्याक्षतैः सरलतांचित-चित्तवृत्ति-
र्दादोपसंज्ञजिनदत्त - गुरुं यजेऽहम् ॥

— मन्त्र —

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।।

७—नैवेद्य पूजा ।

दूहा—

गुरु पूजो नैवेद्यसे, त्रिभुवन जन गुण गाय ।
अनाहारपद योगतें, भूख सभी मिट जाय ॥

(तर्ज—बलिहारी बलिहारी बलिहारी०)

उपकारी उपकारी उपकारी दादा गुरु उपकारी,
नर नारी पूजो श्रीगुरु भावसे जी ।। टेर ॥
जोगणियाँ चौसठ आवे, गुरुको छलने के दावे ।
किन्तु छलगई वे विचारी ॥ दादा गुरु० ।। १ ॥
जोर न जब चला, बोलें कर जोरे अबला ।
हम गुरु दासी तुम्हारी ॥ दादा गुरु० ॥ २ ॥
सात वरदान देवें, गुरु तब छोड़ देवें ।
हैं गुरु पूरे ब्रह्मचारी ॥ दादा गुरु० ॥ ३ ॥
विक्रमपुरमें भारी, चारों दिशा में मारी ।
फैली जब हुई हाहाकारी ॥ दादा गुरु० ॥ ४ ॥

कोई न कार लागे, लोक हैरान भागे।
श्रीगुरु शरण मझारी ॥ दादा गुरु० ॥ ५ ॥
जैनोंमें प्रकटी साता, हैं गुरु शान्ति दाता।
विप्रोंने विनती उचारी ॥ दादा गुरु० ॥ ६ ॥
रक्षा हमारी करो, मारीको दूर करो।
हम शिर आज्ञा तुम्हारी ॥ दादा गुरु० ॥ ७ ॥
समकित श्रावकदीक्षा, साधुदीक्षा सुशिक्षा।
दें गुरु शान्ति अवतारी ॥ दादा गुरु० ॥ ८ ॥
किये एक लाख पर, तीस हजार वर।
गुरु श्रावक गुण धारी ॥ दादा गुरु० ॥ ९ ॥
जैनेतर शुद्धि करते, संघ की वृद्धि करते।
श्रीजिनशासन जयकारी ॥ दादा गुरु० ॥ १० ॥
समपरिणामी नामी, निन्दक वन्दक में स्वामी।
"हरि" कहे जाऊं बलिहारी ॥ दादा गुरु० ॥ ११ ॥

॥ श्लोक ॥

ननाधि भोतिकगदादिविमर्दनाय,
शश्वद् बुभुक्षितपदोदयवारणाय।
नैवेद्यवस्तुभिरनुत्तर-सद्रसाढ्यैं —
र्दादोपसंज्ञजिनदत्तगुरुं यजेऽहम्॥

— मंत्र —

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

८—फल पूजा

दूहा

सरस सुकोमल सफल-पद, पूजो श्रीगुरु-राज ।
नित सुर-शिवसुख फल मिले, निजधर अविचल राज ॥

(तर्ज केसरिया थांसु प्रीत०)

वरदायीं गुरु की सेवा करो रे भवी भाव से (टेर)
श्रीजिनदत्तसूरीश्वर दादा, मनवांछित फलदानी ।
परम प्रभावक अतिशयज्ञानी, और न जिनके सानीरे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ १ ॥
विचरंता वड़नगर पधारे, उत्सवमय जयकारी ।
श्रीजिनशासन संघ महोदय, घर-घर मंगलाचारी रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ २ ॥
अभिमानी ब्राह्मण ईर्षानल-जलते कुमत विचारी ।

मृत गैया जिनमन्दिर आगे, रख निन्दा विस्तारी रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ३ ॥

संघ सकल व्याकुल कहे गुरुसे, रखिये लाज हमारी।
तब गुरुने निज योग शक्ति मृत-गैया में संचारी रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ४ ॥

श्रीगुरु-महिमा लख नत-मस्तक-ब्राह्मण आज्ञा धारें।
संघ के सेवक अब तक भी वे-भोजक सेवा सारें रे।
वरदायी गुरु की० ॥ ५ ॥

सुर-नर-वीर-पीर सब सेवक-ब्रह्म योग बल खींचे।
श्रीसद्गुरु के चरण कमल में, निज भक्ति जल सींचे रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ६ ॥

सद्गुरु ध्यान करो दुःख नाशे-आतम ज्योति प्रकाशे।
निज अज्ञान दशा हटने से-अनुभव लील विलासे रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ७ ॥

सुखसागर - भगवान सुगुरुकी - पूजा भवि विरचावें।
सुर 'गुणनायक हरि' गुण लायक कीरती प्रतिदिन गावें ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

इष्टातिमिष्टरस पूर्णपदाय दिव्य—
स्वर्गापवर्ग-सुखभोग-फलाय भक्त्या
सर्वर्तुजन्य सुरसैः सुफलै मनोज्ञ—
दादोपसंज्ञ-जिनदत्त गुरु यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त सूरीश्वराय फलं यजामहे स्वाहा

※ कलश ※

सुविधि विपय परतन्त्रता-गंगा पुण्यप्रवाह ।
श्रीजिनदत्त महेशतं-प्रकट तीनों राह ॥

(तर्ज—बोल वन्दे मातरम)

गुरुदेव श्रीजिनदत्त की नित प्रेम पूजा कीजियें ।
गुरुविमल गुण की सुधा का पान प्रतिदिन कीजियें ॥टेर॥
बारसौ ग्यारह विशद आपाढ़ सुद एकादशी ।
गुरुने किया अजमेर अनशन ध्यान हरदम कीजियें ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ १ ॥

पूज्य सीमन्धर प्रभु मुखतें, प्रथम सुरलोक में !
उत्पत्ति अरु एकावतारी, जान पूजा कीजियें ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ २ ॥

दादागुरु के पट्ट उदयाचल विराजी चन्द्र से।
मणिधारी श्रीजिनचन्द्र गुरु दील्ली में वन्दन कीजियें ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ ३ ॥

क्रान्तिकर सत्याग्रही - गुरु पूजकर संसार में।
कीर्तिका विस्तार पूरा - शीघ्र अपना कीजियें ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ ४ ॥

उन्नीससौ नव्यासी संवत् वरवसंत सुपंचमी।
चन्द्रवार सुपूर्ण रंग-वसंत का लख लीजियें ॥
गुरुदेव-श्रीजिन० ॥ ५ ॥

हाथरस दादा प्रतिष्ठा योग में उपयोग से।
पूज्य सद्गुरु पूज अपना-पूज्य आतम कीजियें ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ ६ ॥

गणनाथ सुखसिन्धु गुरु भगवान सागर पूज्यवर।
दिव्य करुणा पुण्यतम अवतार दर्शन कीजियें ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ ७ ॥

ॐ अर्हं नमः

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी

श्रीजिनचन्द्र सूरिश्वर-पूजा

* श्री गुरुपद स्थापना *

(शार्दूल विक्रीडितम)

(१)

ॐ अर्हं पदमात्मसाद्भवति वै येषां प्रभावात्सतां,
ये पूज्या अतिशायि-पुण्यचरिता आचार-सार व्रताः ।
ते श्रीमज्जिनचन्द्र-सूरि-गुरवो दादा मणिधारिणः
पीठेऽत्रावतरन्तु पूत-मनसा भक्त्या नतः प्रार्थये ॥

❀ आह्वान मन्त्र ❀

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं मणिधारी श्रीजिनचन्द्र-सूरि-सुगुरो ! अत्रावतरावतर स्वाहा ॥

❀ स्थापना मन्त्र ❀

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं मणिधारी श्रीजिनचन्द्र-सूरि-सुगुरो । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा ॥

❀ सन्निधिकरण मन्त्र ❀

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि-सुगुरो ! मम सन्निहितो भव वषट् स्वाहा ।

मङ्गलाचरण

दूहा –

ॐ अर्हं जिनचन्द्रवर, मणिधारी गुरुदेव ।
करूं भक्ति भर भाव से, चरण कमल की सेव ॥ १ ॥
मणियाले दादा गुरु, सदा जागती जोत ।
दिल्ली में दर्शन किये, जीवन पावन होत ॥ २ ॥
जिन शासन ज्योतिर्धरा, दादा श्रीजिनदत्त ।
पट्ट प्रभावक आपके, मणियाले गुरु सत्त ॥ ३ ॥
जिन आज्ञा सुविहित विधि खरतर पालनहार ।
उपकारी गुरु देव की, जाऊँ मैं बलिहार ॥ ४ ॥
दादा दूजे भाव से, पूजे जो नर नार ।
मन वांछित पावें सहज, पहुँचें भवोदधि पार ॥ ५ ॥
कलानिधि गुरु देव की, कृपया अपरंपार ।
जीवन की बढ़ती कला, होवें दूर विकार ॥ ६ ॥

जिन विरहे जिन थापना, तिम गुरुविरहे मान।
द्रव्य भाव अधिकार से, पूजा सुगति निदान ॥ ७ ॥

१—जल पूजा

दूहा

विमलगुणी गुरुदेव की, दिव्य विमल गुणदाव।
जल-पूजा मल को हरे, भरे विमल गुणभाव ॥

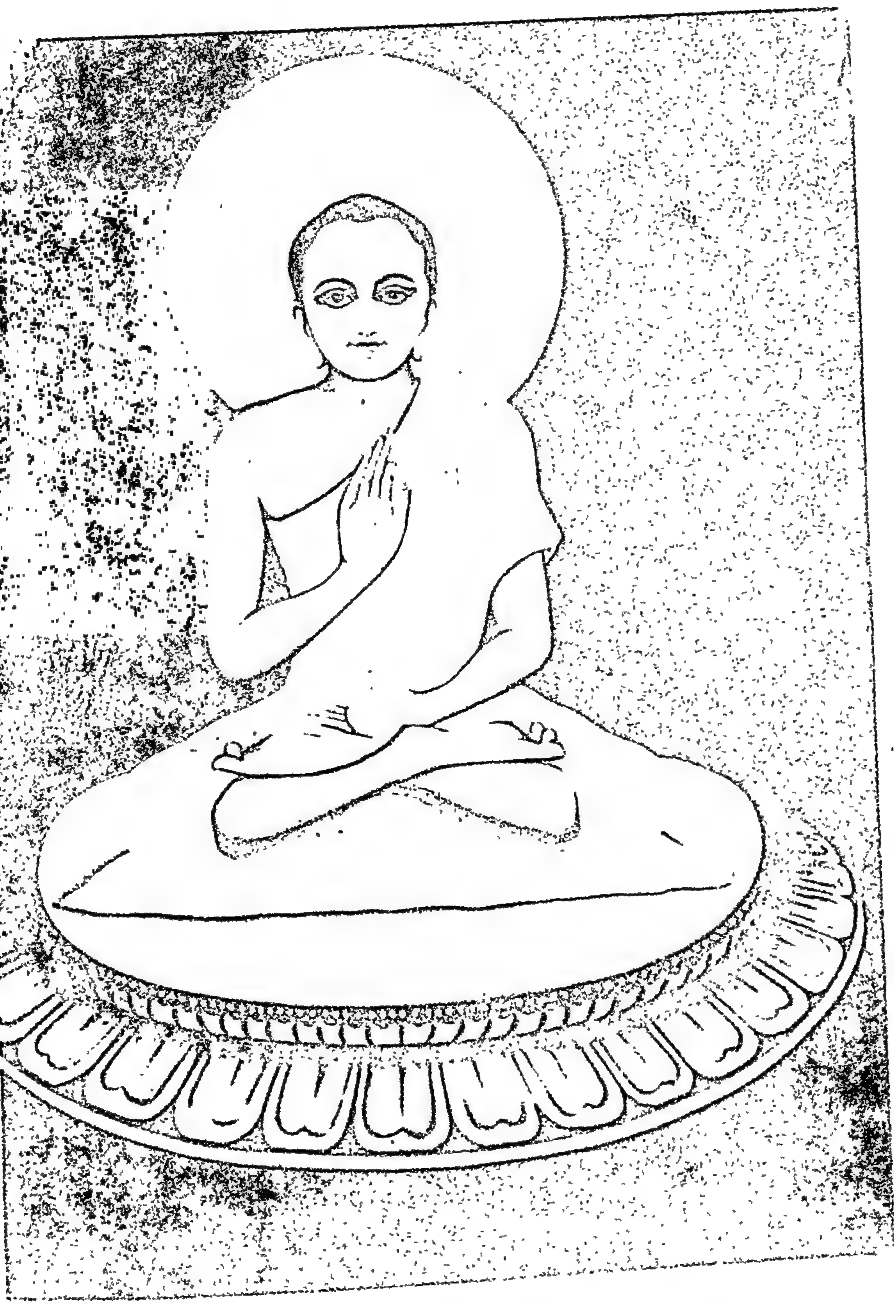
(तर्ज—अवधू सो जोगी गुरु मेरा० राग-आशावरी)

गुरु की जल पूजा मलहारी,
जाऊँ मैं बलिहारी ॥गुरु०॥टेर॥

जल पावनता रहती है, गुरु हैं पावन कारी।
यातें जल पूजा नित करियें, निर्मल भाव विचारी ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ १ ॥

जल कहते जीवन को रस को, गुरु हैं जीवन दाता।
ज्ञान सरसरस सींच-सींच कर, प्रकटाते सुखसाता ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ २ ॥

श्री जिनचन्द्र सूरि मणियाले, दादा गुरु उपकारी।
जिन शासन के परम प्रभावक जग में जय-जय कारी ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ ३ ॥



सूरीश्वर जी म० सा०

॥ श्लोक ॥

सज्जीवनाधार रस-प्रवाही;
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारि दादा ॥
तत्पादपद्मद्वितयं जलेन,
प्रक्षालयामीह सुबोध-शुद्ध्यै ॥

— मंत्र —

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय जलं यजामहे स्वाहा ॥

---

२ — चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केसर रंग सुगंधगुण—कपूर उज्ज्वल योग।
गुरु चन्दन भवतापहर—पूजे धन भविलोग ॥

(तर्ज—भोनासर स्वामी अन्तरजामी तारो पारसनाथ राग-माढ)

सद्गुरु मणियाले जगउजियाले ताप मिटावनहार ॥टेर॥
विक्रमपुरमें बालकपन में, सद्गुरु खेलें खेल।

परिजन पुरजन के मन होती, सुख की रेलंपेल रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ १ ॥

परम प्रभावकता की झाँकी, कर पाते भविलोक ।
रोग शोक सन्ताप भूलकर, होते भाव-अशोक रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ २ ॥

एक दिनां जिनदत्तसूरीश्वर, 'चर्चरी' ग्रन्थ महान् रे ।
धर्म प्रचार विचार से भेजें, पढ़ते भविगुणवान् रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ३ ॥

देवधरादिक बोध को पाकर, छोड़ कुगुरु कुसंग ।
सद्गुरु का चौमासा करावें, धर सत्संग उमंग रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ४ ॥

दादा दत्त की सत्य कथा सुन, रासल नंदन बाल ।
गुरु सतसंगी संयम रंगी, पावें ज्ञान-विशाल रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ५ ॥

देख सपूत सुलक्षण सद्गुरु, माता-पिता प्रतिबोध ।
साथ विहारी दीक्षा शिक्षा, नित देते अविरोध रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ६ ॥

बारह सो पर तीन सुसंवत, धन्य घड़ी धन योग ।

फागुन सुद नवमी रासलसुत, लें संयम सुख—भोग रे ॥

सद्गुरु मणियाले० ॥ ७ ॥

षट् वर्षन के संयम धारी, अविकारी अवतार।

धन्य गुरु धन्य ऐसे चेले, लोक करें जयकार रे ॥

सद्गुरु मणियाले० ॥ ८ ॥

सुखसागर में लीन गुरु, भगवान की सेवा धार।

चंदन शीतल शांत-सुभावी, अनुपम गुण भण्डार रे ॥

सद्गुरु मणियाले० ॥ ९ ॥

'हरि' सद्गुरु की चंदनपूजा, बोधसुधारसकूप।

सविनय साधो सिद्धि प्रकटे, परमातम पद रूप रे ॥

सद्गुरु मणियाले० ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

सन्ताप-संहारि-रसप्रवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा।
तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,
सच्चन्दनेनेह सुबोधवृद्ध्यै ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते

जिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित
भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

३—पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

गुरु सूरज भविफूलको, विकसित करें विशेष ।
सुमनस् भावे पूजियें, सद्गुरु चरण हमेश ॥

(तर्ज—ऊठो ऊठो ए परमादी जीवड़ा भजलो प्रभुवरको)

राग-रसिया

पूजो पूजो रे मणिधारी दादा-चंदसूरीश्वर को ॥ टेर ॥
रासल नन्दन सुविहित, खरतर-संयम में लीना ।
श्रीजिनदत्त परमगुरु सेवा, अमृत - रस - पीना ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ १ ॥
परम गुरु के पारतंत्र्य में, शिवसाधन करते ।
सर्व तन्त्र-स्वातन्त्र्य भाव में, निर्भय संचरते ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ २ ॥
बारह सो पर पाँच शुकल छठ, वैशाखे मासे ।

विक्रमपुर श्रीवीर जिनालय, वर भावोल्लासे ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ३ ॥

दादादत्त स्वहस्त कमल पे, सूरिपद ठाना ।
आठ वरष के रासलनंदन, मुनि मुनिपरधाना ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ४ ॥

है पूजा का थान गुणी गुण, न च लिंगं न वयो ।
जग बोले जिनचन्द्रसूरी गुरु, जय जय चिरं जयो ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ५ ॥

धन रासल धन देल्हण माता, धन गुरुदत्त सदा ।
धन जिनचन्द्रसूरि मणियाले, मन वांछित वरदा ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ६ ॥

सुखसागर भगवान गुरु, जिनचन्द्र महिमशाली ।
परमातम पद बोध विधायक प्रवचन टकशाली ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ७ ॥

'हरि' गुरुचरण कमल में सुंदर, सुमनस् भावों को ।
अकपट अर्पित कर विकसादो, पुण्य प्रभावों को ।
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

बोधैकदीव्यत्सुरभिप्रवाही–
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।

तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,

मनोऽभिरामैः सुमनस्समूहैः ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

४—धूप पूजा

॥ दोहा ॥

धूप उरधगति कह रहा, सद्गुरु के सत्संग ।

हो समकित शुभ वासना, पूजा धूप प्रसंग ॥

(तर्ज—सभा में मेरा तुमही करोगे निसतारा)

पूजा से पाते भवी भव सिन्धु किनारा ।

सेवा से पाते भवी भव सिन्धु किनारा ॥ टेर ॥

आठ बरस के छोटे बालक,

सद्गुरु आज्ञा के प्रति पालक,

आचारज पद के संचालक,
होते हैं जय जय कारा। पूजा से पाते भवी० ॥ १ ॥

दादा दत्त गुरु-पटधारी,
श्री जिनचन्द्र सूरि मणिधारी,
जश कीरति जग में विस्तारी,
गुरु कृपा का फल सारा। पूजा से पाते भवी० ॥ २ ॥

दत्त गुरु ने बात सुनाई,
योगिनीपुर मत जाना भाई,
इसमें है बस रही भलाई,
करो नित धर्म प्रचारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ३ ॥

भावी सूचना विशद विधानी,
योग-ज्ञान बल दिव्य निशानी,
सावधानता की थी वानी,
गुरु का महा उपकारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ४ ॥

बारह सो ग्यारह आषाढी,
देव शयनि ग्यारस गुणगाढी,
प्रभुभक्ति चितमें अति बाढी,
गुरुदत्त स्वर्गे सिधारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ५ ॥

सद्गुरु का मरणा भी जीना,
हम को देता बोध प्रवीना,
करो आत्म-करतव्य अदीना,
गुरुदत्त बोध उचारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ६ ॥
गुरु ज्योति तव गुरु में प्रकटी,
उदासीनता झटपट विघटी,
संचालन की शासन - शकटी,
गुरु बल तेज उदारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ७ ॥
गच्छपति गुरु श्रीजिनचन्दा,
तेज तिरस्कृत सूरज चन्दा,
संघ चतुर्विध में आनंदा,
फला सुवास अपारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ८ ॥
सद्गुरु सुखसागर भगवाना,
मणिधारी जग जुगपरधाना,
नित पूजो हरि धूप विधाना,
बोधि विशोधन हारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

सदोर्ध्वदिव्यैकगति प्रवाही-
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा।

तत्पादपद्म-द्वितयं यजेऽहं-

सद्भावधूपप्रतिधूपनेन ॥

मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा ।

५—दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

शासन दीपक सद्गुरु, ज्योतिर्मय जयकार ।
दीपक पूजा कीजियें, हो ज्योतिः विस्तार ॥

(तर्ज—केसरिया थांसुं प्रीत लगी रे सच्चा भावसुं)

जीवन उजियाले—
पूजो मणियाले गुरुदेवको ॥ टेर ॥

ग्राम नगर पुर पावन करता, गणपतिगुरु जिनचन्दा ।
जिनशासन परकाशन करते, प्रतिबोधे भवि-वृन्दा रे ॥
जीवन उजियाले० ॥१॥

त्रिभुवनगिरि मरुकोट वादली, इन्द्रादिक पुर नामी।
जिनालयों में कनक कलशध्वज, करें प्रतिष्ठास्वामी रे॥
जीवन उजियाले० ॥२॥

भीमपल्ली—उच्चा—वब्बेरक, आदिपुरों में भारी।
उत्सवमय दीक्षा लें गुरु से, नर-नारी अधिकारी रे॥
जीवन उजियाले० ॥३॥

उनमें नरपति भावी पटधर, जिनपति थे जयकारी।
मत्त वादी-मद मर्दनकारी, नैयायिक अधिकारी रे॥
जीवन उजियाले० ॥४॥

चैत्यवासी पद्मप्रभसूरि, पिता साह क्षेमन्धर।
गुरु से सुविहित बोध प्राप्त कर, हुआ भक्ति में तत्पर रे॥
जीवन उजियाले० ॥५॥

गुरु उपदेशामृत पी भविजन, आत्म लीनता धारी।
श्रावक-व्रत साधु-व्रत धारें, धन धन वे नर नारी रे॥
जीवन उजियाले० ॥६॥

सागरपाडा महावनादि, स्थानों में गुरु राया।
विधिचैत्यों में प्रभु प्रतिष्ठा, उत्सव ठाठ मचाया रे॥
जीवन उजियाले० ॥७॥

अजयमेर जिनदत्त परमगुरु, स्वर्गधाम-अभिरामी।
स्तूप प्रतिष्ठा की सद्गुरुने, भव्य भक्ति दिल जामी रे ॥
जीवन उजियाले० ॥८॥

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण का, दिव्यालोक प्रसारा।
सुखसागर भगवान परमगुरु, दीपक का उजियारा रे ॥
जीवन उजियाले० ॥९॥

"हरि" पूजित जिन शासन भासन, सद्गुरु दीप समाना।
दीपक पूजा पुण्य प्रकाशे, कीजें विनय विधाना रे ॥
जीवन उजियाले० ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

आत्मावबोधोदय-भाववाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारीदादा।
तत्पादपद्म-द्वितयं यजेऽहं,
प्रोद्यत्प्रदीपप्रतिदीपनेन ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय दीपकं यजामहे स्वाहा ॥

६—अक्षत पूजा।

॥ दोहा ॥

सरल समुज्ज्वल भावयम, सद्गुरुपद सविशेप।
अक्षत पूजा-साधना, कीजें अकपट वेश॥

(तर्ज—दादा देव दयालु, तुम को लाखों प्रणाम)

मणिधारी महाराज तुमको लाखों परणाम।
करु विनय से पूजा करके लाखों परणाम॥ टेर॥
संघ चतुर्विध समरथ नेता, परवादी मत सफल विजेता।
नेता सफल विजेता गुरुको, लाखों परणाम मणि० ॥१॥
पुर नरपाल में ज्योतिष मानी, गुरु हरावें पूरे ज्ञानी।
ज्योतिषविद्यावाले गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥२॥
रुद्रपल्ली में आप पधारे, लघुवय था, थी शक्ति आपारे।
दिव्य शक्ति बलशाली गुरुको, लाखों परणाम मणि० ॥३॥
पद्मचंद्र वहँ शिथिलाचारी, बड़ा घमंडी चर्चाकारी।
उसे हराने वाले गुरुको, लाखों परणाम मणि० ॥४॥
तमो द्रव्य चर्चा विस्तारी, राज सभा के सब अधिकारी।
गुरुकी जय जय बोलें, गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥५॥
स्वपर समय के सद्गुरु ज्ञाता, विबुधन को गुरु बोध सुहाता।
विशद युक्ति बलवाले, गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥६॥

सद्गुरु सुखसागर भगवाना, सरल समुज्ज्वल भाव विधाना।
मार्ग दिखाने वाले, गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥७॥
'हरि' अक्षतविधि पूजाधारे, सद्गुरु सेवक काज सुधारें।
चन्द्रसूर गुणवाले, गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥८॥

॥ श्लोक ॥

चिदक्षतानन्दरसप्रवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारि दादा ॥
तत्पादपद्म द्वितयं यजेऽहं,
समुज्ज्वलैर्नै सरलाक्षतौघैः.

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्र-सूरीश्वराय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥

७—नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

मन-मोदक मधुरातमा श्रीसदगुरु महाराज।
पूजो नित नैवेद्य से, पाओ शिवपुरराज ॥

(तर्ज -- तुम्हारे पूजन को भगवान्. बना मन मंदिर आलीशान)

गुरु मणिधारी वांछितदान ।

करें नित पूजो चतुर सुजान ॥ टेर ॥

जिनकी महिमा अपरंपारी, जीवन घटना जय जयकारी ।

श्रवण कर पीलो अमृतपान, भरे बल औजस पुण्यप्रधान ॥

गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ १ ॥

विचरते मणियाले मुनिनाथ, संघ सेवा में रहता साथ ।

पधारे गांव सु वोरसिदान, म्लेच्छ वहँ आये काल समान ॥

गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ २ ॥

डरो मत धीर बनो नरनार ! तुम्हारे सद्‌गुरु हैं रखवार ।

देकर यह आश्वासन दान, सुरेखा खींची किला-समान ॥

गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ३ ॥

पापी म्लेच्छ हुए गुमराह, गुरु की यौगिक शक्ति अथाह ।

दिया गुरु ने बस जीवनदान, हुए नर नारी निर्भय प्रान ॥

गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ४ ॥

गुरु ने महतियाण जाती, बोधे गोत्र विविधभांती ।

हुए वे जैन धर्म अगिवान, अहा ! गुरु बोध शक्ति विज्ञान ॥

गुरु मणियाले वांछितदान० ॥ ५ ॥

पूर्व दिक् तीर्थों का इतिहास, बताता महतियाण परकाश ।

प्रतिज्ञा उनकी एक महान्, "जिनं जिनचन्द्रं नमें न आन" ॥
गुरु मणियाले वांछितदान० ॥ ६ ॥

गुरु ने सिरीमालवर वंश, कई गोत्रों में अनुपम अंश ।
देकर पावन समकितज्ञान, बढ़ाया जैन संघ सन्मान ॥
गुरु मणियाले वांछितदान० ॥ ७ ॥

जो नित जपता सद्गुरु नाम, पाता सुख संपति धनधाम ।
सुरतरु सुरमणि परतिख मान, गुरुको, सेवो हे मतिमान् ! ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ८ ॥

न होता भूत प्रेत भय भोग, मिटते आधि-व्याधि-वियोग ।
करें गुरुदेव परम कल्यान, धरो नित मनमें गुरु का ध्यान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ६ ॥

दादा मणिधारी जिनचन्द, काटें कोटी संकट-कंद ।
गुरु हैं सुखसागर भगवान, हरिगुरु पूजो धर पकवान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

सन्मोदकोऽयं मधुरप्रवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।
तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,
सन्मोदकाद्यैर्मधुरात्मभावैः ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

८—फल पूजा

॥ दोहा ॥

सद्‌गुरु सेवा मधुर फल, जो चाखें नर नार ।
जनम मरण को मेटकर, हो जाते भवपार ॥

(तर्ज—शुं कहूँ कथनी म्हारी राज शूं कहूँ कथनी म्हारी)

चरण कमल वलिहारी नाथ ! जाऊँ हे मणिधारी ।
पूजा फल अविकारी नाथ ! पाऊँ हे मणिधारी ॥ टेर ॥
धन्य धरातल धन्य घड़ी वह, विचरते जब स्वामी ।
दरशन धन धन वे नर पाते, जो होते शिवगामी ॥
नाथ चरण कमल वलिहारी
जाऊँ हे मणिधारी नाथ ॥१॥
योगिनीपुर जो अब दिल्ली है, उसके पास पधारे ।
गुरु विचरते भावी-खींचे भविजन काज सुधारें ॥
नाथ चरण कमल वलिहारी० ॥ २ ॥

सद्गुरु महिमा को सुन पाये मदनपाल महाराजा
दर्शन कर हो हर्षित विनती, करते साथ समाजा
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ३ ॥

योगिनीपुर में नाथ पधारो, बोधसुधा को पिलाओ
मिथ्यामत विष से हम मरते, आंप दयालु जिलाओ
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ४ ॥

परमगुरु जिनदत्त ने रोका, जाना कैसे होवे !
राजा का आग्रह, फल भारी, होनी हो सो होवे
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ५ ॥

आप पधारे योगिनीपुर जो, दील्ही आज कहाया
सद्गुरु पद-रज पावन भूमी, तीरथ रूप मनाया
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ६ ॥

चंद चकोर मोर मन मेहा, त्यों सद्गुरु से नेहा
मदनपाल नृप आदिक होते, श्रावक गुरुगुण गेहा
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ७ ॥

था कुलचन्द्र वहां अकिंचन, किन्तु भगत था भारी
सद्गुरु महिर नजर दौलत से, हुआ धनद अवतारी
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ८ ॥

मिथ्या दृष्टि देव को, सद्गुरु, समकित दें उपकारी ।
जिनमंदिर थंभे में थापें, करे शासन रखवारी ॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ९ ॥

सुखसागर भगवान गुरु की सेवा सफल हमेशा ।
'हरि' फल पूजा भविजन, कीजे धरते भाव विशेषा ॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

स्फुर्जच्छिवोत्तमफलैकरसप्रवाही
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।
तत्पादपद्म द्वितीयं यजेऽहं,
प्रधान— पुण्यात्मफलप्रदानैः ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय फलं यजामहे स्वाहा ॥

६—वस्त्र पूजा

॥ दोहा ॥

गुरु आज्ञा वर वस्त्र ही, लाज रखे संसार ।
सद्गुरु पूजो वस्त्र से विनय विवेक विचार ॥

(तर्ज सुअप्पा आप विचारो रे०)

राग भैरवी

उपकारी अवतार सुपूजो उपकारी अवतार ।
श्रीजिनचंद परमगुरु पूजो उपकारी अवतार सुपूजो ॥टेर॥
दील्ही में चौमासा ठावें, हेतु पर उपकार ।
आतम-ध्यान तन्मय गुरु रहते, अप्रमाद गुणधार सुपूजो ।१।
सद्गुरुसिद्ध मदननृपसाधक, जोड़ी पुण्यअपार ।
अनुपम अद्भुत हुआ जगतमें श्रीजिनधर्मप्रचार सुपूजो ।२।
श्रीजिनदत्त परमगुरु पावन, वचन भविष्य विचार ।
अन्तसमय सद्गुरु निजजाने,अभयभाव अविकार सुपूजो ।३।
संघ चतुर्विध को प्रतिबोधें, रत्नत्रय भण्डार ।
खूब बढाते जाना रखना, तीन तत्त्वआधार सुपूजो ।४।
पण्डित मरण उदास न होना, जीवन तत्त्व विचार ।
सुविहित विधि आचारी होना, करना प्रचार सुपूजो ।५।

नरपति गणपति योग्य समझना, है मेरा निर्धार।
शासनकी रक्षा नित करना, करना निज उद्धार सुपूजो।६।
ब्रह्मतेज पूरण मणि, मेरे मस्तक रही उदार।
दूध कटोरे में ले लेना, होगा जय जयकार सुपूजो।७।
संवत बारह सो तेवीसा, भाद्रव दूजा धार।
कृष्णपक्ष चौदसको सद्गुरु, पहुंचे स्वर्ग मझार सुपूजो।८।
सद्गुरु-विरही संघ चतुर्विध, करता शोक अपार।
जीवन तत्त्व विचार अंतमें, धारें धीरज सार सुपूजो।९।
सद्गुरु सुखसागर भगवाना, समकितगुणदातार।
'हरि पूजित' मणिधारी दादा पूजो परमाधार सुपूजो।१०।

॥ श्लोक ॥

सद्बोध वस्त्रात्मकभाववाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा।
तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,
पवित्रवस्त्रप्रतिढौकनेन॥

मंत्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित

भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
वस्त्रं यजामहे स्वाहा ।

१०—ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

जीवन ध्वज ऊँचा रहे, श्रीसद्गुरु परसाद ।
ध्वज पूजा भवि कीजियें, मिटे सभी अवसाद ॥

(तर्ज— झंडा ऊंचा रहे हमारा)

जीवन ध्वज गुरु जय जयकारा ।
मणिधारी जिनचन्द्र हमारा ॥ टेर ॥

जिन शाशन अति उच्च भवन में, ऊर्ध्व अधो मध तीन भुवन में ।
श्रीजिनचन्द्र यशध्वज धारा, जीवन ध्वज गुरु जय जयकार१।
पथ भूलों को पथ दिखलाता, मूढजनो को बोध दिलाता ।
है सद्गुरु ध्वज नित अविकारा, जीवन ध्वज गुरु जय जयकारा २।
सब को बस उत्थान बताता, ज्ञान ज्योति को ही चमकाता ।
पतितोंका भी सुखद सहारा, जीवन ध्वज गुरु जय जयकारा ३।
सद्गुरु ध्वज की बलि बलि जावें, महापुण्य से दर्शन पावें ।
सद्गुरु ध्वज है प्राणाधारा, जीवन ध्वज गुरु जय जयकार ४।

वर्द्धमान ने इसे प्रचारा, अभय बनाकर भय संहारा।
सद्गुरु ध्वज यह महाउदारा, जीवन ध्वज गुरु जयजयकारा।५।
निजवल्लभ की शक्ति इसमें, जिनदत्तातम ज्योति इसमें।
सद्गुरु ध्वज है गुण भण्डारा जीवन ध्वज गुरुजय जयकारा।६।
महतियाण वर वंश बनाया, सुविहित विधि पट बस फैलाया।
सद्गुरु ध्वज है मोहनगारा, जीवन ध्वज गुरु जय जयकारा।७।
सुखसागर भगवान इसीमें, हरि पूजित ध्वज भाव इसीमें।
ध्वज जिनचन्द्र विसतारा, जीवन ध्वज गुरु जयजयकारा।८।

॥ श्लोक ॥

ध्वजानुरूपो वर-मार्गवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा।
तदालये भक्तिभरात्मनाहं,
मारोपयामि ध्वजमात्मशुद्ध्यै ॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमपुरुषस्य परमगुरुदेवस्य भगवंतः
श्रीजिनशासनोद्दीपकस्य नरमणिमण्डित भालस्थलस्य
श्रीजिनदत्तसूरीश्वरस्य मंदिर शिखरोपरि
ध्वजमारोपयामि स्वाहा ॥

*** कलश ***

॥ दोहा ॥

गर्व तजो सद्गुरु भजो, गौरव बढ़े अपार।
गुरु सतसंगी नित बनो, पाओ भवजल पार॥

(तर्ज—मैं आया तेरे द्वार पर०)

श्रीमणिधारी महाराज, महिमा अपरंपारी है।
जिनचन्द जागती जोत, जगतमें जय जयकारी है ॥टेर॥

श्रीजिनदत्त परमगुरु कृपया पट वर्षवय में।
सा रासल देल्हण देवी नन्दन संयमधारी हैं श्रीम० ॥१॥

चौदह वर्षी वयमें गुरुने गणपति पद धारा।
करवादि विजय निज जश कीरति जगमें विस्तारी है श्रीम०॥२॥

श्रीमहतियाण महतीं जाती को जैन बना करके।
श्रीसंघवृद्धि करनेवाले गुरुकी बलिहारी है श्रीम० ॥३॥

दल्होपति श्रीमदनपाल महाराजा को बोधा।
जैन बनाया, धर्म भावना खूब प्रचारी है श्रीम० ॥४॥

प्रतिबोधे श्रीमालवंश के पोत्र कई गुरु ने।
है उनका इतिहास जीवनी उनकी भारी है श्रीम० ॥५॥

हा ! छब्बीस बरस की वयमें स्वर्गवास पाये।
दल्ही तीरथ धाम धन्य अधुना उपकारी है श्रीम०॥ ६ ॥

भादो कृष्ण चतुरदशी गुरुकी पुण्य जयंती को।
खूब मनाओ मानो फिरतो विजय हमारी है श्रीम० ॥७॥
श्रीजिनपति सूरश्वर सद्गुरु के पटधारी थे।
मत्तवादीगज सिंहकेसरी कीर्ति उदारी है श्रीम० ॥८॥
खरतरगणनायक सुखसागर श्रीभगवान्गुरु।
मणिधारी दादा की पूजा मंगल कारी है श्रीम० ॥९॥
उन्नीस सो अट्ठाणु सुद, आषाढी दूज दिने।
मोकल सर में पुण्य प्रयत्नै यह अवतारी है श्रीम० ॥१०॥
दिव्य सत्य इतिहास भावसे सद्गुरु दर्शन पा।
जिनहरि' सद्गुरु-पूजा गाओ आनन्दकारी है श्रीम० ।११।

* श्री *

द्वितीय दादा

नरमणिमण्ति भालस्थल—श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वर सद्गुरु की

* आरती *

जय जय मणिधारी—जग जन उपकारी।
ॐ जय जय मणिधारी ॥ टेर ॥
शासन थंभ समाना सद्गुरु-आरति हितकारी।
दिल्ही में दरशन कर परसन-होवें नर नारी।
ॐ जय जय मणिधारी ॥ १ ॥

मदनपाल नरपति प्रतिबोधक-संघवृद्धिकारी ।
महतियाण महतीजाती में समकित परचारी ।
ॐ जय जय मणिधारी ॥ २ ॥
जिनहरिपूज्य परमगुरु शरणा-भव भव सुखकारी
पाउं पूजूं पुण्ययोग से - जय मंगल कारी ।
ॐ जय जय मणिधारी ॥ ३ ॥

इति पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आबाल ब्रह्मचारी जैनाचार्य
श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचिता
श्रीद्वितीय दादा गुरुदेव पूजा
समाप्ता



ॐ अर्हं नमः

श्रीतृतीय दादा गुरुदेव
श्रीजिनकुशल सूरीश्वर-पूजा

---

* श्री गुरुपद स्थापना *

(द्रुतविलम्बित वृत्तम्)

(१)

अवतरावतरात्र दयानिधे ?
कुशलसूरिगुरो ! सुख सागर ! ।
जिनमते भगवन् ! हरि-पूज्य हे !
करुणया परमं कुशलं गुरु ॥

(आह्वान मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिन कुशल सूरि गुरो !
अत्रावतरावतर स्वाहा ।

(स्थापना मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिन कुशल सूरि गुरो ?
अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा ।

(सन्निधिकरण मन्त्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीजिन कुशल सूरि गुरो ! मम संनिहितो भव वषट् स्वाहा ।

१—जल पूजा

॥ दोहा ॥

ॐ अर्हं गुरुदेव पद, रविशशि ज्योतिविशेष
हृदय तिमिर हर बोध दें, वंदन करु हमेश ॥ १ ॥
सकल कुशल मंगल करण, परम कुशल गुरुदेव ।
सेवा से मेवा मिले, साधूं सद्गुरु सेव ॥ २ ॥
सुविहित खरतरवर विधि, विस्तारक सुखकार ।
जिन शासन भासन गुरु, पूजन परमाधार ॥ ३ ॥
दादा श्रीजिन कुशल गुरु, श्रीपद पुण्य प्रभाव ।
कुशल भाव पूजन कियां, विघटे अकुशल भाव ॥ ४ ॥
गुरु सेवा से शिष्य भी, होवे गुरुपद योग ।
पारस फरसन लोह भी, होत कनक गुण भोग ॥ ५ ॥
परमेष्ठी तीजे पदे, आचारज सिरताज ।
पूजूं नित भव सिन्धु से, तारक दिव्य जहाज ॥ ६ ॥

निर्मल जल चन्दन प्रमुख, द्रव्य भाव दो भेद ।
पूजो भविजन भाव से, दूर टरे सब खेद ॥ ७ ॥
श्री गुरुपद पूजा करो, विशद भाव जलधार ।
पाप ताप मल दूर हो, आतम शान्ति अपार ॥ ८ ॥

(तर्ज—तुमको लाखों प्रणाम)

हो परम प्रभावक कुशल गुरु को लाखों प्रणाम ।
पाप ताप मलहारि गुरु को लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥

जिन शासन में जीवन दाता,
खरतर सुविहित विधि विधाता,
कुशल कुशल गुण वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ १ ॥

वीर जिनेश्वर पाट पचासे,
परमेष्ठी पद पुण्य विलासे,
युग प्रधान पद वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ २ ॥

भारत मरुधर मंडल पावन,
जन्म भूमि समियाणा धन धन,
तीर्थ बनाने वाले गुरु को लाखोंप्रणाम ॥ ३ ॥

ओसवाल वर वंश विभूषण,
पुनित छाजेड गोत्र अदूषण,
कुल उजवालन वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ४ ॥

मंत्री जेल्हागर गुरु ताता,
सती जयतसिरी सद्गुरु माता,
मन को हरने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ५ ॥

विक्रम तेरह—सैंतीसा में
लगन घड़ी शुभ पुण्य दिशा में,
जन्म सुपाने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ६ ॥

बालक पन में पुण्य प्रभावे,
व्यवहारिक गुण ज्ञान उपावे,
कुशल नाम अभिरामी गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ७ ॥

पुण्यवान् गुणवान् सुनिर्भय,
सुख सागर भगवान् महोदय,
मार्ग बताने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ८ ॥

विशद भाव जल जीवन धारा,
'जिन हरि' पूजो नित अविकारा,
पूज्य कुशल पदवाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ९ ॥

(काव्यम्)

यः पाप—संताप—मलापहारी,
दादा-भिधानः कुशलाख्य-सूरिः ।

तत्पाद-पद्म द्वितीयं नमामि,
जलेन भक्त्या स्नपयामि नित्यम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय जलं यजामहे स्वाहा।

२—चन्दनपूजा

दोहा—

भव-भय-रोग हरें गुरु, चन्दन पूजा योग।
आतम-शान्ति अनन्तगुण, प्रगटे शिवसुख भोग॥

(तर्ज—भिनासर स्वामी अंतरजामी तारो पारसनाथ)

राग माढ

भव रोग निवारें बोध प्रचारें श्रीगुरु गुण भण्डार।
हाँ·········श्री गुरु गुण भण्डार भव रोग निवारें० ॥ टेर ॥

तेरह सें सेतालीस फागुन, सुदिसातम सुखकार।
कुशलकीरति दश वर्ष के बालक, पण्डित वर अनगाररे
भवरोग निवारें० ॥ १ ॥

कलिकाल केवली नृप प्रतिबोधक, गुरुजिनचन्द्र सूरीन्द।
पावन बोधि विशोधित आतम, सेवितपद अरविन्दरे ॥
भवरोग निवारें० ॥ २ ॥

गुरुगम आगम तत्त्व विवेक, निजपरमत के जाण।
षड् दर्शन निज दर्शन कारक, तारक मुनि गुणखाण रे॥
भवरोग निवारें० ॥ ३ ॥

तपजप संयमी ज्ञानी ध्यानी, प्रकटित्त पुण्य प्रताप।
श्रीजिन शासन रक्षकशिक्षक, दूर हरें दुःख ताप रे॥
भवरोग निवारें० ॥ ४ ॥

परम अहिंसक धर्म प्रचारक, सत्य विचारकसार।
अस्तेय वृत्ति ब्रह्मव्रतीवर, अकिंचन अविकाररे॥
भवरोग निवारें० ॥ ५ ॥

सुविहित सद्गुरु पारतंत्र्य में, प्रतिदिन वर्तनहार।
धीर–वीर–गंभीर सुजीवन, जग जन तारणहाररे॥
भवरोग निवारें० ॥ ६ ॥

जन्मभूमि गुरुदीक्षा भूमि समियाणा सुखधाम।
सुखसागर भगवानमहोदय, गुरु पूजो अविरामरे॥
भवरोग निवारें० ॥ ७ ॥

कुशल मंगलकारी कुशलगुरु हैं, बावना चन्दनरूप।
वन्दन पूजन करते भविजन, होवें 'हरि' गुण भूपरे॥
भवरोग निवारें० ॥ ८ ॥

(काव्यम्)

भवरोगहारी परमोपकारी
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः ।
तत्पादपद्म—द्वितयं-नमामि
सच्चन्दनेनेह सदायजेऽहम् ॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परमगुरु देवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल
सूरीश्वराय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

३—पुष्पपूजा

॥ दोहा ॥

गुरु वसन्त ऋतु रूप है, भविजन जीवन फूल ।
गुरुपद पूजो फूल से, शूल होय सब फूल ॥

(तर्ज—आई वसंत बहाररे प्रभु पूजो मगन में)

कुशलकरण गुरुराजरे, नमो भविजन भावे ।
भविजन भावे शुभगुण आवे,
नमोकुशल गुरु राजरे नमो भविजन भावे० ॥ टेर ॥

श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर सदगुरु,
पदसंगो जयकाररे नमो भविजन भावे ॥
कुशल कीरति मुनिनायक लायक,
होवे गुण आगाररे नमो भविजन भावे० ॥ १ ॥
तेरह से पिचहत्तर माघे,
सुद बारस शुभयोगरे नमो भविजन भावे ॥
जसु कीरतिरति अनुपम सौरभ,
फैली भुवनाभोगरे नमो भविजन भावे० ॥ २ ॥
डालामाउ कन्यानयरे,
आशिकानर भक्तरे नमो भविजन भावे ॥
वागड जावालिपुर निवासी,
संघ भक्ति गह गट्टरे नमो भविजन भावे० ॥ ३ ॥
नगर नगीना संघ प्रमुख श्री,
विजयसिंह सुभक्तरे नमो भविजन भावे ।
सेट्ठ-रूडा अरु दिल्ही के,
अचलसिंह संजत्तरे नमो भविजन भावे० ॥ ४ ॥
पंच शब्द के बाजे बाजें,
गाजे गगन घन गाजरे नमो भविजन भावे ।

मंगल गीत मधुर धुनि मंजुल,
गावें भक्त समाजरे नमो भविजन भावे० ॥ ५ ॥
नंदी दिव्य महोत्सव पूर्वक,
श्रीनागोर मझाररे नमो भविजन भावे।
वाचना चारज पद श्री गुरु दें,
कुशल कीरति को सारदे नमो भविजन भावे० ॥ ६ ॥
गुरु वसन्त जन जीवन पावन,
फूल प्रफुल्लित होतरे, नमो भविजन भावे।
जग में जिससे अतिमनोहर,
प्रसरे परिमल पूररे नमो भविजन भावे० ॥ ७ ॥
वाचना चारज कुशल कुशल गुरु,
सुखसागर भगवानरे नमो भविजन भावे।
'हरि गुरु पूजा हृदय कमल में,
पावो कुशल निधानरे—नमो भविजन भावे० ॥ ८ ॥

(काव्यम्)

भव्य-प्रसून-प्रतिबोधकारी,
दादाभिधानः कुशलाख्य सूरिः।
तत्पाद-पद्म-द्वितयं नमामि,
प्रसून-पुञ्जैः परिपूजयामि ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

४—धूप पूजा

॥ दोहा ॥

हैं गुरु धर्म दशांगयुत, उरध सिद्ध गति भाव ।
पूजो धूप दशांग से, गुरुपद गुरुपद दाव ॥

तर्ज—(हो उमराव थारी बोली प्यारी लागे)

हो गुरुराज पद शुभ भावधरी नित पूजो नर नार ।
हो गुरुराज पूजा करते भविजन होवें भव पार ॥
भवपार हो जी नर नार ॥ टेर ॥
कुशल कीरति मुनिराजकी, कुशल कीर्ति विस्तार ।
जब छाई जग में यहां, जन बोलें जयकार ॥
हो गुरुराज श्रीजिनशासन भासन कारी सुखकार ।
हो गुरुराज० ॥ १ ॥
नरपति बोधक सद्गुरु, गणपति श्रीजिनचन्द्र ।
आयु शेष निज जानते, आतम-ध्यान-अमंद ॥

हो गुरुराज निज पदयोग्य कुशल को देखे अविकार।

हो गुरुराज० ॥ २ ॥

श्री राजेन्द्राचार्य को, दे गुरु आज्ञा लेख।
कुशल कुशल पद योग्य है, यामें मीन न मेख ॥
हो गुरुराज जग उपकारी जानी महिमा हितकार ॥

हो गुरुराज० ॥ ३ ॥

आराधक गुरुदेव के, श्रमणोपासक वीर।
विजयसिंह को दे गुरु, लेखाज्ञा तदबीर ॥
हो गुरुराज पुण्य प्रकाश विराजित देवें बोधसार ॥

हो गुरुराज० ॥ ४ ॥

संघ चतुर्विध साथ में, करते धर्मप्रचार।
कोसाणा में श्रीगुरु, पहुँचे स्वर्ग मझार ॥
हो गुरुराज श्रीजिनचन्द्र विरह में छाया अन्धकार ॥

हो गुरुराज० ॥ ५ ॥

तेरहसो सतहत्तरे, ग्यारस मिति वदि जेठ ॥
कुम्भ लगन निश्चित करें, संघ सत्र जग शेठ ॥
हो गुरुराज पाटण पुण्य महोत्सव जाऊं बलिहार

हो गुरुराज० ॥ ६ ॥

तेजपाल दानी गुणी, रूडपाल सहयोग।
आमंत्रें श्री संघ को, पूर्व पुण्य—धनयोग॥
हो गुरुराज शोभा पाटणकी कया वरणूं थी अपार
हो गुरुराज०॥ ७॥

श्री राजेन्द्राचार्य तत्र, लेखाज्ञा अनुसार।
कुशलकीर्ति मुनिराज का, करें नाम संस्कार॥
हो गुरुराज श्रीजिन कुशल सूरीश्वरकी हो जयकार
हो गुरुराज०॥ ८॥

श्रीजिन कुशल सूरीश्वर, दादा युग परधान।
अतिशयधारी पूज्यवर, सुख सागर भगवान॥
हो गुरुराज पद 'हरि' पूजो भावे होवो भवपार
हो गुरुराज०॥ ९॥

(काव्यम्)

धर्म—प्रचारी वर—बोधकारी
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः।
तत्पाद—पद्म—द्वितयं नमामि
दशांग-धूपं सुपरिक्षिपामि॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा ॥

५—दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

मन सुपात्र गुण वृत्तिकर, सद्गुरु धरम सनेह ।
ज्ञान उजेला नित करे, दीपक पूजा एह ॥

(तर्ज—जिन मत का डंका आलम में)

अज्ञान तिमिर अति दूर किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ।
वर ज्ञान प्रकाश प्रचार किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ।
जिनचन्द्र परम गुरु विरह हुआ,
अंधेरा सब जग छाया था ।
ज्योतिर्मय पद परकाश किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ।
अज्ञान तिमिर० ॥ १ ॥

अति दिव्य सुपंचाचार विधि,
स्वाधीन समाराधन करके।
निज पर हितकर उपदेश दिया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने।
अज्ञान तिमिर० ॥ २ ॥

पंचेन्द्रिय विषम विषय त्यागी,
नव विधवर ब्रह्म गुपतिधारी।
कर पंचसमिति दी शुभ शिक्षा,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ३ ॥

अध्यातम सम्यक् भाव भरें,
सविवेक महाव्रत पंच धरें।
अपना परका कल्याण किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ४ ॥

हैं दुश्मन चार कषाय उन्हें,
झट तीनों गुप्ति में कैद किये।
संयम पथ सुन्दर शुद्ध किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने।
अज्ञान तिमिर० ॥ ५ ॥

युग धर्म विकाश विशेष किया,
जग में जीवन संचार किया।
कर दी प्रभावना शासन की,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ६ ॥

छत्तीस महागुण धारक हो,
दुर्गुण सब दूर भगा करके।
शुभ काम नाम अनुसार किये,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ७ ॥

गुरु दीपक पूजा करते हैं,
भव वन में वे न भटकते हैं।
'हरि' मार्ग बताया उन्नति का,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ८ ॥

(काव्यम्)

यो दीपकोऽज्ञानतमोऽपहारी,
दादाभिधानः कुशलाख्य-सूरिः

गुरु के भक्त थे गुरुवर, अतः मूर्तियोंकी की।
प्रतिष्ठा आज भी उनकी, अजत्र आनन्द देती है॥
कुशल गुरु० ॥ ८ ॥

गुरु थे आप सुख सागर, गुरु भगवान उपकारी।
"हरि" गुरुदेव की पूजा, अजत्र आनन्द देती है॥
कुशल गुरु० ॥ ६ ॥

(काव्यम)

सदाक्षताचार-विचारकारी,
दादा—भिधानःकुशलाख्य—सूरिः।
तत्पाद—पद्मद्वितयं नमामि,
तथाक्षतैःसाधु नतो यजेऽहम् ॥

॥ मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्री जिन शासनोद्दीपकाय श्री जिन कुशल सूरीश्वराय अक्षतं यजामहे स्वाहा।

७—नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

सरस मधुर उपदेश सुन, श्री गुरु का सुविशेष।
सरस मधुर नैवेद्य से पूजो गुरु हमेश ॥

(तर्ज—महावीर तुम्हारी मोहनमूर्ति देख मन ललचाय)

जिन कुशल सूरीश्वर ज्ञानी गुरु की जाउं में वलिहार ।
पूजूं नित सविनय भावे गुरुकी जाउं बलिहार ।। टेक ।।

गुरु ज्ञानी जग उपकारी, आगम उपदेश विहारी ।
आगम उपदेश विचारी, गुरु की जाउं मैं वलिहार ।।
जिन कुशल ।। १ ।।

सत-भंगीनय परणामी, वरस्याद् वाद् गुणखाणी ।
अमृत सम सुखकरवाणी, गुरु की जाउं मैं वलिहार ।।
जिन कुशल ।। २ ।।

नवतत्व वोध विस्तारी, समभावें गुरु उपकारी ।
हेयादिक भाव विचारी, गुरु की जाउं मैं वलिहार ।।
जिन कुशल ।। ३ ।।

षड् द्रव्य यथारथ तत्त्वें, जड़ चेतन पावन सत्त्वें ।
सुविवेक रहा सम्यक्त्वे, गुरुकी जाउं मैं वलिहार ।।
जिन कुशल ।। ४ ।।

मिथ्यात्वतिमिर भर नासे, आतमगुणपुण्य प्रकाशे ।
श्रीसद् गुरुवोध विलासे, गुरुकी जाउं मैं वलिहार ।।
जिन कुशल ।। ५ ।।

गुरु रवि शशि दीपक जैसे, गुरु सुरमणिसुरतरु जैसे।
गुरुसागर सुरगिरि जैसे, गुरुकी जाउं मैं बलिहार॥
जिन कुशल॥ ६॥

गुरु आसातनको टाली, गुरु आज्ञा जिसने पाली।
उसने गुरु पदवी पाली, गुरुकी जाउं मैं बलिहार॥
जिन कुशल॥ ७॥

गुरु सुखसागर भगवाना, गुरु जगमें युग परधाना।
'हरि' सेवो शुद्ध विधाना, गुरुकी जाउं मैं बलिहार॥
जिन कुशल॥ ८॥

(काव्यम्)

सुधासमान प्रतिबोधकारी
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः॥
तत्पाद पद्मद्वितयं नमामि
ढौकेऽथ नैवद्यमहं सुभक्त्या॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय
भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल
सूरीश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

८—फल पूजा

॥ दोहा ॥

परम पुण्य कल्याण फल, दायी श्री गुरुदेव ।
फल पूजा मैं नित करु, सफल सत्य गुरुसेव ॥

(तर्ज भवभय हरणा शिव सुख करणा सद्धाम जो ब्रह्मचारा में वारि जाउं)

फल पूजा सद् गुरुकी करते, प्रगटे अति सुख साता ।
मैं वारि जाउं प्रगटे अति सुख साता ॥ टेर ॥
श्रीजिनकुशलसूरीश्वरदादा, मनवांछित फलदाता ।
मैं वारि जाउं मनवांछित फल दाता ॥ १ ॥
चन्द्र चकोर मोर घन बादल, गुरु भविजन मन भाता ।
मैं वारि जाउं गुरु भविजन मन भाता ॥ २ ॥
दर्शन चन्दन करते तन मन-पाप मिट जाता ।
मैं वारि जाउं पाप ताप मिट जाता ॥ ३ ॥
बिन गुरु नर निगुरा कहलावे-भव भटकत दुःख पाता ।
मैं वारि जाउं भव भटकत दुःख पाता ॥ ४ ॥
गुरु आज्ञावर्ती हो प्राणी, अगम निगम गुणज्ञाता ।
मैं वारि जाउं अगम निगम गुण ज्ञाता ॥ ५ ॥
चैत्यवन्दनवर कुलकवृत्तीका, गुरु साहित्य प्रख्याता ।
मैं वारि जाउं गुरु साहित्य प्रख्याता ॥ ६ ॥

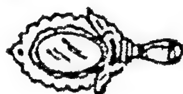
गुरुसाहित्यउदितआदित्यकी, ज्योतिजगसुखदाता।
मैं वारि जाउं ज्योति जग सुख दाता ॥ ७ ॥
गुरु पारस फरसत नर लोहा, वर सुवरन बनजाता।
मैं वारि जाउं वर सुवरन बन जाता ॥ ८ ॥
सुखसागर भगवान सुगुरु हरि, पूजो भवभयत्राता।
मैं वारि जाउं पूजो भव भय त्राता ॥ ९ ॥

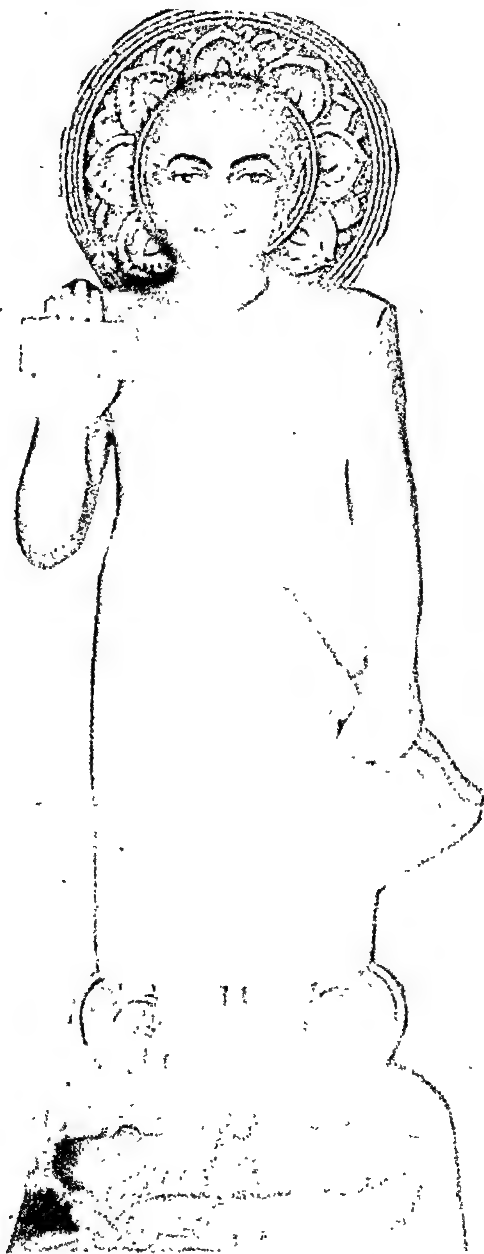
(काव्यम्)

कल्याण-कल्पद्रु फल प्रदायी
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः ॥
तत्पाद-पद्मद्वितयं नमामि
फलेन पूजांसु समाचरामि ॥

मंत्र —

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुपाय परमगुरु देवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल
सूरीश्वराय फलं यजामहे स्वाहा।





युग प्रधान परम पूज्य दादा गुरुदेव श्री जिनकुशल सूरि जी

कुगुरु कुदेव कुधर्म, दादा त्याग करावे।
समकित वर दे दान, अनहद आनन्द कारी॥
श्री जिन कुशल०॥ ५॥

निश्चय अरु व्यवहार. दादा भेद बतावे।
निश्चय धरो दिल बीच, वर्तो थे व्यवहारी॥
श्री जिन कुशल०॥ ६॥

सुख सागर भगवान, दादा कुशल गुरु की।
महिमा अपरम्पार, गावे सब नर नारी॥
श्री जिन कुशल०॥ ७॥

गुरु आज्ञा परिधान, भविजन जो कर पावे।
सुर गणपति 'हरि' तास गावे कीरति भारी॥
श्री जिन कुशल०॥ ८॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुपाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥

१०—ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

जिनशासन पावन-भवन सद्गुरु ध्यान अनूप ।
ध्वज पूजाकर भविक जन होवें त्रिभुवन भूप ॥

(तर्ज—त्रीस वरप घरमां वस्या मन मोहनजी)

गुण गिरुआ गुरु पूजियें-मन मोहनजी ।
निज भरिये पुण्य भंडार-भव भय हरियेरे ॥
मन मोहनजी ॥ टेर ॥

कुशल सूरि गुरु राजरे-मन मोहनजी ।
करदेश विदेश विहार-धर्म प्रचारीरे मन मोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ १ ॥

संघ चतुर्विध साथमें-मन मोहनजी ।
जाने यात्री वृन्द-आनन्द कारीरे मन मोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ २ ॥

ग्यासुद्दीन आदिक हुए मनमोहनजी ।
बादशाह महा भाग-गुरु गुण रागीरे मन मोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ ३ ॥

म्लेच्छ उपद्रव जो करे मन मोहनजी ।
दे प्रति रोधक फरमान-गुरु परतापीरे मनमोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ ४ ॥

जैनेतर शुद्धिकरी मनमोहनजी ।
संख्या पचास हजार गुरु प्रभावीरे मनमोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ ५ ॥

दशवर्षों तक गुरु रहे मनमोहनजी ।
श्री जैनलधर शृंगार-बोध अपारीरे मनमोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ ६ ॥

तीस वरष साधु रहे मनमोहनजी ।
गुरु आज्ञा पालनहार-हो अनगारीरे मनमोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ ७ ॥

चार बरस सूरवर रहे मनमोहनजी ।
खरतर गण नायक ज्ञान-पुण्य प्रकाशीरे मनमोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ ८ ॥

तेरह सो नव्यासिये-मनमोहनजी ।
फागुण अमावसजाण-गुरु-गुणखाणीरे मनमोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ ९ ॥

सिन्धु मुख्य देराउरे-मनमोहनजी ।
गुरुस्वर्ग सिधारे हंत दुःख अपारीरे मनमोहनजी ।
गुण गिरुआ० ॥ १० ॥

रीहड हरिपालादिने मनमोहनजी ।
स्वर्गोत्सव किया अपार "हरि" जयकारीरे मनमोहनजी
गुण गिरुआ० ॥ ११ ॥

(काव्यम्)

ध्वजायमानो गुरु-जैन-संघे
दादाभिधानः कुशलाख्य-सूरिः ।
तत्पाद-पद्म-तृतीयं नमामि
ध्वज प्रतिष्टामहमाचरामि ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय
भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल
सूरीश्वराय ध्वजं यजामहे स्वाहा ।

कलश

दोहा—

सद्गुरु-पद-परतंत्रता, निजस्वतंत्रताहेतु।
पूजन कर आराधिये-गुरु भवजल-निधिसेतु॥

(तर्ज—तुम्हें नाथ नैया तिरानी पड़ेगी)

गुरु तुम्हें नैया तिरानी पड़ेगी
तिरानी पड़ेगी तिरानी पड़ेगी
गुरु तुम्हें नैया तिरानी पड़ेगी॥ टेर॥
स्वर्गसिधारे खेवनहारे।
पर संघ-नैया तिरानी पड़ेगी॥ गुरु० १॥
सुखसूरिकी समयसुन्दरकी।
नैया के जैसे तिरानी पड़ेगी॥ गुरु० २॥
थोथर गुजरमलकी जैसे।
नैया हमारी तिरानी पड़ेगी॥ गुरु० ३॥
लखमीपति दूगडकी जैसे।
विपति हमारी मिटानी पड़ेगी॥ गुरु० ४॥
केइ हजारों भक्त उतारे।
बाँह हमारी पकड़नी पड़ेगी॥ गुरु० ५॥

शरणागत प्रतिपालक अपनी।
सत्य प्रतिष्ठा निभानी पड़ेगी ॥ गुरु०६ ॥
श्रीजिनकुशल गुरु सुख सागर।
शान्ति लहर को चलानी पड़ेगी ॥ गुरु०७ ॥
गुरु भगवान तुम्हें बस ध्याउं।
अपनी दयाको दिखानी पड़ेगी ॥ गुरु०८ ॥
उन्नीससे चोराणु सरग दिन।
अरजी ध्यानमें लानी पड़ेगी ॥ गुरु०९ ॥
विक्रम पुरवर दर्शन पाउं।
अपनी झांकी दिखानी पड़ेगी ॥गुरु०१०॥
"हरि" गुरु पूजा संघ चतुर्विध।
मंगल माला दिखानी पड़ेगी ॥ ११ ॥

॥ श्री ॥

तृतीय दादा

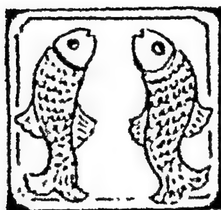
परम प्रभावक–श्रीजिनकुशल सद्गुरु की

॥ आरती ॥

जय जय गुरुदेवा, सेवा दे सुख मेवा।
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ टेर ॥

आरती हरणी आरतिगुरुकी, पावन पद देवा ।
परम कुशल करणी गुणभरणी, सद्‌गुरु पद सेवा ।
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ १ ॥
गुरुदीपक गुरुरविशशि ज्योति-जगतमें सुख देवा ।
दय तिमिर भरदूरनिवारे-दिव्यनूर चमकेवा ॥
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ २ ॥
जिन हरि पूज्य कुशल गुरु दादा-निर्भय समरेवा ।
वांछितपूरे संकट चूरे-सबदेवी देवा ॥
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ ३ ॥

इति पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आबाल ब्रह्मचारी जैनाचार्य
श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचिता
श्रीतृतीय दादा गुरुदेव पूजा
समाप्ता


मीनयुगल

❀ ॐ अर्हं नमः ❀

श्री चतुर्थ दादा गुरुदेव श्रीमदकब्बरशाहि प्रतिबोधक-

श्रीजिन चन्द्रसूरीश्वर-पूजा

॥ श्री गुरुपद स्थापना ॥

(शार्दूल विक्रीडितम)

(१)

ॐ अर्हं प्रणिधान तत्परमना याचेऽधुना साञ्जलिः-

श्रीमच्छ्रीजिनचन्द्रसूरिभगवान् हेतुर्यदादागुरो ! ।

भव्यानां सुखसागरोन्नति कृते गाढान्धकारोच्छिदे,

पीठेऽस्मिन्नमृतात्मनावतरतुप्रौढप्रभावो - भवान् ॥

(आह्वान मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अकब्बरशाहि प्रतिबोधक युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि सुगुरो ! अत्रावतरा वतर स्वाहा ।

श्रीजिन वीर हिमालय पावन, सद्गुरु गंग-प्रवाह ।
गौतम-सौधर्मादिक सेवो, शिवपुर सारथवाह रे ।
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ १ ॥
श्री उद्योतन सद्गुरु चेला, चौरासी गुणवान ।
चौरासी गच्छ-हेतु उनमें, वर्द्धमान प्रधान रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ २ ॥
श्री वर्द्धमान गुरुपद सेवी, सूरिजिनेश्वर ओर ।
बुद्धिसागर सूरि सद्गुरु, ज्ञान-क्रिया गुण जोर रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ३ ॥
पाटण दुर्लभराज सभामें, शिथिलाचारी साध ।
जीते गुरुने पावन पाया, 'खरतर' विरुद अबाध रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ४ ॥
पटधर श्रीजिनचन्द्र गुरुपद, नवांगवृत्तिकार ।
अभयदेव पदे जिनवल्लभ, जिनशासन शृंगार रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ५ ॥
पटधर पहेले दादा श्री जिन-दत्त प्रभाव अमाप ।
उनके चन्द्रसूरि मणियाले, दूजे दादा आप रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ६ ॥

पट्ट परंपर तीजे दादा, कुशल कला अभिराम।
श्रीजिन कुशल गुरुपद पूजो, पूरे वांछित काम रे॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ७ ॥

पट्टानुक्रम श्रीजिनमाणिक, सद्गुरु गुण भण्डार।
पट्टप्रभावक चौथे दादा, जगमें जय जयकार रे॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ८ ॥

दादा गुरु सुखसागर सांचे, पूज्येश्वर भगवान्।
अकबर भाव अहिंसक हेतु, युगपरधान महान रे॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ९ ॥

'हरि' गुरु श्रीजिनचन्द्र सूरीश्वर, दादा चरणसरोज।
भक्ति विमल जल सींचो फैले, निज आतम बल ओज रे॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

दिल्हीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः
पादरविन्दयुगलं विमलात्मभावं,
दिव्यज्जलेन विमलेन सदा यजेऽहम्।

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरीश्वराय जलं यजामहे स्वाहा ॥

२—चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य-भाव चन्दन समा, सद्गुरु गुण अभिराम ।
चन्दन पूजा कीजिये, होत शांति सुखधाम ॥

(तर्ज मेरे राम अयोध्या बुलालो मुझे)

गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ।
कर पूजन शांति सुधाम भयो ॥ टेर ॥

मरु खेतनगर में ओशवंशी गोत्र रीहड सन्मति ।
श्रीवंत शाह-प्रधान सिरिया धर्मपत्नि थीं सती ॥
गुरु माता-पिता पद पुण्य जयो ।
गुरु चन्द सुचंदन रूप जयो ॥ १ ॥

परमेष्ठि-निधि-सर-चन्द्र संवत, चैतवद वर वारसे ।
जन्मे सुलक्षण रूप-राजित पूर्ण तेजो-भार से ॥

सुलतान कुमार सुनाम जयो ।
गुरु चन्द सुचंदन रूप जयो ॥ २ ॥

गणनाथ जिन माणिक्य, सूरीश्वर पधारे खेतसर ।
सोलसो पर चार संवत धर्म कार्य हुए प्रवर ॥
सुलतान कुमार विरागी जयो ।
गुरु चंद सुचन्दन रूप जयो ॥ ३ ॥

विनय विधि वर युक्ति से निज जनक जननी आज्ञया ।
दिव्य उत्सव साधु - पद पाये परम गुरु - सेवया ॥
सुमतिधीर सुनाम विशेष जयो ।
गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ॥ ४ ॥

बाल वयमें गुरु - विनय से, पुण्य विद्या प्राप्त की ।
बुद्धि वैभव कीर्ति अपनी, सब दिशामें व्याप्त की ॥
गुरु ज्ञान महान प्रधान जयो ।
गुरु चंद सुनन्दन रूप जयो ॥ ५ ॥

देराउरके जाते जेसलमेर गुरु माणिक्य वर ।
स्वर्गवासी होगये निज कीर्ति छोड़गये अमर ॥
सद्गुरु पद सुमतिधीर जयो ।
गुरु चन्द सुनन्दन रूप जयो ॥ ६ ॥

युग चन्द्र रस भू भादवा सुद, वार गुरु नवमी सुखद।
श्री गुणप्रभ – सूरिवरने, सूरिमंत्र दिया विशद॥
नृप माल महोत्सवकारी जयो।
गुरु चन्द सुचन्दन रूप जयो॥ ७॥

साधु सुमतिधीर वर, विख्यात नाम हुए तभी।
गणनाथ श्री जिनचन्द्र, सूरिराज जय बोलें सभी॥
सुखसागर गुरु भगवान जयो।
गुरु चन्द सुचंदन रूप जयो॥ ८॥

नृप नगर जेसलमेर धन धन, सूरिगुणप्रभ वेगडा।
माणिक्य गुरु पद धन्य धन, जिनचन्द्र गुरु गुणमें बड़ा॥
'हरि' चंदन पूजा भाव जयो।
गुरु चंद सुचंदन गुरु जयो॥९॥

॥ श्लोक ॥

दिल्लीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधानसुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्दयुगलं वरचन्दनेन,
सद्वन्दनानतमनाः सततं यजेऽहम्॥



जं० यु० प्र० भ० दादा गुरु देव श्री जिन चन्द्र सूरीश्वर जी म० सा०



युवा मुनि श्री चन्द्रप्रभ सागर

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय बादशाह अकबर प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

३—पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य भाव विकशित विमल-मंजुल गुरु पद फूल ।
नित फूलों से पूजियें-सुर-शिवसुख अनुकूल ॥

(तर्ज—प्रभु धर्मनाथ मोहे प्यारा, जगजीवन मोहनगारा)

(राग-बनझारा)

जिनचन्द्र गुरु जयकारी, नित पूजो जग उपकारी ।
गुण ज्ञान-क्रिया-अधिकारी, निज जीवन विकसित कारी ॥टेर॥

गुरु जेशलमेर विराजें, गणनायक पद-गुण ताजे ।
सोलह सो बारह-साले, चौमासा धर्म-प्रचारी ॥
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ॥ १ ॥

बच्छावत सिंह संग्रामा, मन्त्री विनती गुणधामा ।
गुरु बीकानेर पधारे, उत्सव के ठाठ अपारी ॥
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ॥२॥



युवा मुनि श्री चन्द्रप्रभ सागर जी

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय बादशाह अकबर प्रति-बोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

३—पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य भाव विकशित विमल-मंजुल गुरु पद फूल।
नित फूलों से पूजियें-सुर-शिवसुख अनुकूल॥

(तर्ज—प्रभु धर्मनाथ मोहे प्यारा, जगजीवन मोहनगारा)

(राग-वनझारा)

जिनचन्द्र गुरु जयकारी, नित पूजो जग उपकारी।
गुण ज्ञान-क्रिया-अधिकारी, निज जीवन विकसित कारी ॥टेर॥

गुरु जेशलमेर विराजें, गणनायक पद-गुण ताजे।
सोलह सो बारह-साले, चौमासा धर्म-प्रचारी॥
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ॥ १ ॥

बच्छावत सिंह संग्रामा, मन्त्री विनती गुणधामा।
गुरु बीकानेर पधारे, उत्सव के ठाट अपारी॥
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ॥२॥

मन्त्री घुडशाला भारी, गुरु संयम शुद्धाचारी।
मत्थेरण शिथिलाचारी, गुरु साधु क्रिया सुधारी॥
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ॥ ३॥

गुरु महेवा में चौमासी, तपस्या होवे छम्मासी॥
जिन शासन जगति प्रकाशे, गुरु योग-तपोबलधारी॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥४॥

ग्रामानुग्राम विहारे, गुरु पाटण नगर पधारे।
वहां सागर चर्चाकारी, विजयी गुरु जय विस्तारी॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥५॥

सोलह सो सतरे वरसे, कातिक सुद सातम दिवसे।
सब गच्छी थे मध्यस्था, गुरु जय जय कीर्ति उचारी॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥६॥

सागर ने अति अभिमाने, कई ग्रंथ लिखे मनमाने।
वे जलशरणागति पाये, गुरू महिमा अपरंपारी॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥७॥

जिनचन्द्र गुरु सुखसिंधु, भगवानअकारण बन्धु।
हैं चरण-शरण सुखकारा, पूजों भवि सुमनस् धारी॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥८॥

कमनीय कुसुम वरमाला, पूजो गुरु पुण्य विशाला।
हरि सद् गुरु की बलिहारी, दें विकसित पद अविकारी॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥९॥

॥ श्लोक ॥

दिल्हीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरो जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविन्द युगलं कुसुमोपचारैः,
सत्सौरभैरनुदिनं प्रणतो यजेऽहम् ॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट प्रति-बोधकाय युगप्रधान श्रीजिचन्द्रसूरीश्वराय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

४—धूप पूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य-भाव सौरभमयी, सद्गुरु श्रीजिनचन्द ।
सौरभमय वर धूप से, पूजो परमानन्द ॥

(तर्ज—केसरिया थांसु प्रीत लागी रे सच्चा भावसूं)

सुरभित गुण बोधा,

सद्गुरु जिनचन्दा सदा पूजियें ॥ टेर ॥
थंभण-पारस भेटें सद्गुरु, खंभायत चौमासा ।
प्रभु प्रतिष्ठा साधु-दीक्षा, बहुविध धर्म प्रकाशा रे ॥१॥
अमदावादे सद्गुरु पासे सारंगधर सतवादी ।
श्रावक लावे गुरु महिमाहित, मानी पण्डित वादीरे सुर०॥२॥
एक समस्या मक्खी लाते, त्रिभुवन कांपा भारी ।
चित्र लिखा वह जलकुंडेमें, नृप बोला बलिहारीरे सुर०॥३॥
बीकानेर सुपार्श्व प्रतिष्ठा, महिमराजकी दीक्षा ।
पटधारी जो आगे होंगे, पा सद्गुरु से शिक्षारे सुर० ॥४॥
श्रीनाडोल नगर में सद्गुरु, मुगल सैन्य भयभागे ।
सद्गुरुध्यान अभयपददाता, जीवन ज्योति जागेरे सुर०॥५॥
मेवातादिक विकट देशमें, होकर सदगुरु भावे ।
हस्तीनापुर सौरिपुरादिक, भेंटे पुण्य प्रभावे रे सुर० ॥६॥
पुर जालोरे अरु पाटण में, गुरु शास्त्रार्थ जीते ।
राजनगरमें खरतर दृढ़ता, करें परमगुरु प्रीतेरे सुर० ॥७॥
चार दिशाके महासंघ सह, गुरु सिद्धाचल भेंटे ।
निजपर दर्शन शुद्धि करते, कुमति कुवासना मेंटे रे सुर०॥८॥
सतत विहारी सदगुरु चउविध, संघ महोदय करते ।
पंचमहाव्रत अरु बारहव्रत, अभयभाव नित भरतेरं सुर० ॥९॥

सदगुरु सुखसागर भगवाना, गुरु 'हरि' पूज्य प्रधाना।
गुरु सौरभभर धूप सु पूजा, करो भविक गुणवानारे सुर०॥१०॥

॥ श्लोक ॥

दिल्हीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्दयुगलं कलयाभिरामं
सद्गन्धिधूप करणेन सदा यजेऽहम्।

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमपुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा।

५—दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य भाव दीपक गुरु, पूजो दीपक धार।
लोकालोक विलोककर, पावो सुखभण्डार॥

(कुबजाने जादु डारा)

राग-सोरठा

जिनचन्द्र जगत सुखदाना रे।
गुरु दीपक ज्योति प्रधाना ॥
विबुधनके मुखतें गुरु महिमा, सम्राट अकबर जाना।
मंत्री कर्मचन्द्र बच्छावत, आमन्त्रण फरमाना रे गुरु० ॥१॥
खंभायत अतिदूर, निकट में चौमासे का आना।
पदचारी हैं सद्गुरु तो भी, होगा धर्म महानारे गुरु० ॥२॥
सविनय विनती-पत्र गुरु को, भेजे चतुर सुजाना।
महा धरम का लाभ समझगुरु, शुभ शुकने प्रस्थानारे० ॥३॥
आषाढी सुद आठम विचरे, तेरस गुरु गुणवाना।
राजनगर में संघ महोदय, स्वागत सुखदविधानारे गुरु० ॥४॥
सद्गुरु संघ उभय यह निश्चय, अपवादे थिर ठाना।
धर्मोन्नति राजाग्रह संगत, चौमासे का जानारे गुरु० ॥५॥
सिधपुर-पाटण अरु पालणपुर, सद्गुरु का पधराना।
सुन आमंत्रे राव सिरोही-स्वामी श्रीसुरताना रे गुरु० ॥६॥
जीव असारी आठ दिवस, नित पूनम अभय प्रधाना।
पर्युषण गुरु करें सिरोही, उत्सव पुण्य खजानारे गुरु० ॥७॥

जावालीपुर शेष चौमासा, अकबर का फरमाना ।
मिगसर पुष्ये गुरु गामानु, गाम विहार वितानारे गुरु॥८॥
रोहीठ ठाकुर गुरु उपदेशें, दें जीवाभयदाना ।
जेशल जोधपुरादि भारी, संघ करें सनमाना रे गुरु०॥६॥
विलाडे गुरु अरु मेडते, मंत्री सुत अगिवाना ।
पंचशब्द वे बाजे बाजें, साथे विजय निशानारे गुरु०॥१०॥
गुरु नागोर पधारें मंत्री, मेहा उत्सव ठाना ।
वीकानेरी संघ गुरु को, वांदे विनय विधानारे गुरु०॥११॥
वापेउ पडिहारा माला सर रिणीपुर नाना ।
सदगुरुस्वागत संघचतुर्विध जीवतजनम प्रमानारे गुरु०॥१२॥
सरसा सुखसागर वरभूमि, हापाणई मनभाना ।
मंत्रीकर्म वधाई वांटे, धन धन गुरु भगवानारे गुरु०॥१३॥
हरि गुरु दीपक चौद भुवनमें, पाप पतंग जराना ।
दीपक पूजाकर नितभविजन, आतमज्योति जगानारेगुरु१४।

॥ श्लोक ॥

दिल्लीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान
दादाभिधानसुगुरो जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविन्द-युगलंप्रकट प्रकाशं,
दीपप्रदीप करणेन सदा यजेऽहम् ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट प्रति-बोधकाययुगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय दीपं यजामहे स्वाहा

६—अक्षतपूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य भाव अक्षत गुरु, अक्षतपद अभिराम ।
अक्षत पूजा कीजियें, हो अक्षत धन-धाम ॥

(तर्ज—जावो जावो हे मेरे साधु रहो गुरु के संग)

पूजो पूजो हे भविजन सद्गुरु अक्षत भाव अभंग ।
पूजो पूजोजिनचंदसूरीश्वर दादा प्रेम अभंग ॥ टेर ॥
कर्मचंद्र मंत्री अगिवानी, मिलकर श्रावक संघ ।
श्रीलाहोर पधरावें, महा महोत्सव रंग पूजो०॥१॥
वर वाजित्र विजयध्वज आगे हाथी मत्त तुरंग ।
राज पुरुष सद्गुरु स्वागत में आये महा उमंग पूजो०॥२॥
सोलह सो अडतालीस फागुन सुदी बारस दिन चंग ।
अकबर परिजन सह गुरु दर्शन करता भाव सुरंग पूजो०॥३॥

थे इक्तीस यशस्वी पण्डित साधु सद्गुरु संग।
महती महिमा लख गुरुवर की दुनिया रह गई दंग पूजो०॥४॥
दिव्य धरम-प्रवचन जगहितकर पावन गंग तरंग।
सुन अकबर तन मन से बोला धन सद्गुरु सतसंग पूजो०॥५॥
शाल दुशाले सोना मुहरें मणि-रत्नों के नंग।
अकबर भेंट धरें गुरु त्यागें, धन निस्पृह निस्संग पूजो॥६॥
त्यागी जीवन सब से ऊंचा, हैं गुरु आप उत्तंग।
दर्शन पा हर्षित मन मेरा, धन दिन आज प्रसंग पूजो०॥७॥
करुं प्रार्थना सद्गुरु देना, दर्शन दान अभंग।
नित प्रतिबोध सुनाना प्रगटे, दया धरम दृढ रंग पूजो०॥८॥
अकबर को दें धर्मलाभ गुरु, मंत्री मन उच्छरंग।
परवत शाह सुगुरु पधरावें, उत्सव अद्भुत ढंग पूजो०॥९॥
सुखसागर भगवान परम गुरु, जय-विजयी सरवंग।
अक्षत भावे 'हरि' नित पूजो, जीतो जीवन जंग पूजो०॥१०॥

॥ श्लोक ॥

दिल्लीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान
दादाभिधान सुगुरो र्जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्द युगलं प्रकटप्रभावि,
भव्याक्षतैर्विनयभावनतो यजेऽहम्।

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट प्रतिबो-
धकाय युगप्रधान श्रीजिचन्द्रसूरीश्वराय
अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

७—नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य-भाव पोषण करें, सद्गुरु-वर-परसाद ।
नित पूजो नैवेद्य से, भागे भूख अनाद ॥

(तर्ज—कमली वाले ने०)

जिन धर्म का डंका आलम में, बजावाया चन्द सूरीश्वरने।
अकबर जिनमत अनुरागी किया सद्गुरु जिनचन्द्रसूरीश्वरने॥
॥ टेर ॥

अकबर सुत शाहि सलीम सुता, मूला में जनमी दोप महा।
शांति हित शांति सनात्र रचाई, सद्गुरु चन्दसूरीश्वरने ॥
जिन० ॥१॥

दश सहस्र रुपये मंदिर में, अकबर ने सादर भेंट किये।
जिन शासन गौरव खूब बढ़ाया, श्रीगुरु चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन०॥२॥

निधि वेद ऋतु भू मित वर्षे, अकबर आग्रह को लेकर के।
लाहोर में चौमासा ठाया, गुरुवर जिनचन्द सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ३ ॥

म्लेच्छों से तीरथ रक्षा हित, अकबर को पावन बोध दिया
तीरथ-रक्षा फरमान-पत्र, लिखवाये चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन०॥४॥

काश्मीर विजय को जाते हुए, अकबर ने गुरु दर्शन चाहा।
दे आशीर्वाद प्रसन्न किया, उपकारी चन्द-सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ५ ॥

आषाढ़ी नवमी से पूनम, तक अपने बारह सूबों में।
अकबर से जीवदया फरमान; लिखवाये चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ६ ॥

दिन दश पनरे अस्सीस पच्चीस, तथा महिनादो महिनाकी;
नृप औरों से भी जीवदया, करवाई चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ७ ॥

श्री जयसोमऽरु रत्ननिधाना, उपाध्याय पावन पद पाना।
गुणी गुण का वह था मनमाना, संघ सकल मनभाना ॥
पूजो जुग० ॥ ३ ॥

पंडित श्रीगुणविनय महोदय, समयसुन्दर थे कविवर निर्भय॥
दिव्य वाचनाचार्य यशोमय, पद पाये पुण्य प्रधाना ॥
पूजो जुग० ॥ ४ ॥

धन अवसर धन सद्गुरु गाया, धन अकबर यह भाव उपाया।
धन मन्त्रीश्वर कर्म कहाया, शासन शोभ बढ़ाना ॥
पूजो जुग० ॥ ५ ॥

गुरु पद पुण्य महोत्सव अकबर, श्रीखंभात अखाने जलचर।
जीवों को दें अभयदान वर,—जारी किये फरमाना ॥
पूजा जुग० ॥ ६ ॥

श्री लाहोर नगर में सुखकर, अभय अमारी पटह बजाकर।
सद्गुरु बोध प्रभाव भाव भर, -भरा स्व पुण्य खजाना ॥
पूजो जुग० ॥ ७ ॥

नव हाथी नव गांव अनुत्तर, हय शत पंच विशेष मनोहर।
सवा क्रोड धन जाचक जन-कर, दें मन्त्रीश्वर दाना ॥
पूजो जुग० ॥ ८ ॥

युगप्रधानगुरु जय जयकारा, पुलकितमनजग जन ललकारा ।
सुखसागर गुरु प्राण-आधारा, जय जय गुरु भगवाना ॥
पूजो जुग० ॥ ६ ॥

भव्य भाव की दिव्य निशानी-सद्गुरु पूजो शिव फलदानी ।
'हरि' गुरु पूजो जुगपरधाना-सीधे शिवपुर जाना ॥
पूजो जुग० ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

दिल्लीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधानसुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविन्दयुगलं सफलं फलौघैः
सद्भक्तिभावसम्पूर्णमना यजेऽहम् ॥

— मन्त्र —

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परमगुरु देवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपाकाय अकबर सम्राट प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय फलं यजामहे स्वाहा ॥

६—वस्त्र पूजा । ॥ दोहा ॥

द्रव्य भाव गुरु वस्त्र हैं-रखें हमारी लाज ।
पूजो सद्गुरु वस्त्र से-सिद्ध होंय सबकाज ॥

(तर्ज— महावीर तुम्हारी मोहन मूरत देखि मन ललचाय)

जिनचंद गुरु जयकारी पूजो युगपरधान महान ॥ टेर ॥

गुरु योग-तपो बल धारी, बकरी संख्या त्रिविस्तारी ।
अकबर आश्चर्य अपारी-पाया, धन गुरुवर विज्ञान जि०॥१॥

काजी निजटोपी उड़ाई, गुरु रजोहरण से लाई ।
अद्भुत महिमा दिखलाई, धन धन सद्गुरु महिमावान जि०२

शासन रक्षक गुरु राया, असावस पूनम गाया ।
पूरण वर चांद दिखाया, थे गुरु पूरे पहुँचवान जि० ॥३॥

चोरों ने ग्रन्थ चुराये, गुरु महिमा अंध बनाये ।
सब चोर लगे गुरु पाये, त्यागी चोरी पाप प्रधान जि०॥४॥

तप संयम गुण तदवीरा, गुरु पंच नदी के पीरा ।
थे सधे असुर-सुर-वीरा, गुरु के सेवक भक्तिमान जि०॥५॥

अकबर सम्राट सनूरा, जोधाणपति सिंह सूरा ।
बीकाणपतिराय[2] पूरा, सद्गुरु परम भक्त गुणवान् जि०॥६॥

१—जोधपुर के महाराजा श्रीसूरसिंहजी २—बीकानेर के महाराजा श्रीरायसिंहजी गुरु महाराज के भक्त थे ।

श्री जहांगीर फरमाना, साधु-विहार अटकाना।
दे बोध सुमुक्त कराना, गुरुकी शासन सेव महान् जि०॥७॥
साह शिवा-सोम दो भाई, निर्धनता दूर भगाई।
गुरु सेवा मेवा पाई, सेवो सदगुरु सदा सुजान जि० ॥८॥
गुरु सुखसागर भगवाना, गुरु अशरण शरण प्रधाना।
हरिगुरुपूजोसुविधिविधाना, पावोगुरु-पदगुरु गुणज्ञानजि०॥९॥

॥ श्लोक ॥

दिल्लीश्वराकबर बोधि-युगप्रधान
दादाभिधान सुगुरोर्जिनचन्द्र सूरेः।
पादारविन्द युगलं परमं पवित्रं,
सद्वस्त्रढौकनपरोऽनुदिनं यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट प्रति-
बोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥

१०—ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

द्रव्य भाव ध्वजा रूप हैं '''सद्गुरु शासन गेह ।
ध्वज पूजा कर भविक जन-जनम सफल विधि एह ॥

(तर्ज—तीरथ नी आशातना नवि करिये)

सद्गुरु की कर पूजना भवि भावे, हांरे गुरु पावन पदवी पावे ।
हांरे गुरु ज्ञान कला प्रकटावे, हांरे आसातना टार स० ॥टेर॥
युगपरधान गुणी गुरु जिनचंदा, हांरे उपकारी भाव अमंदा ।
हांरे गुरु ज्योति सूरज चंदा, हांरे मेटे भव भव के सब फंदा ॥
हांरे गुरु तारणहार सद्० ॥ १ ॥
जिन दर्शन अभिरामता गुरु भासे, हांरे प्रभु प्रतिमा भावोल्लासे ।
हांरे गुरु पुण्य प्रतिष्ठा प्रकासे, हांरे उत्सव विधि खूब विलासे ॥
हांरे उनका नहीं पार-सद्० ॥ २ ॥
शाह शिवाजी सोमजी दो भाई, हांरे राजनगरे पुण्यकमाई ।
हांरे प्रभुमंदिर ज्योति जगाई, हांरे गुरु परतिष्ठा अधिकाई ॥
हांरे खोले धन भण्डार-सद्० ॥ ३ ॥
बीकानेर पुरे गुरु जयकारा, हांरे शत्रुंजय सम अवतारा ।
हांरे जिनचैत्य उत्तुंग उदारा, हांरे परतिष्ठा और अपारा ॥
हांरे उत्सव बलिहार-सद्० ॥ ४ ॥

श्रीचिंतामणि देव के भण्डारी, हांरे जिन प्रतिमा गुप्त हजारी।
हांरे गुरु अकब्बर बोध प्रचारी,हांरे लाये महिमा अधिक अपारी॥
हांरे दे उपद्रव टार--सद्० ॥ ५ ॥

सीरोही प्रमुखे पुरे गुरुराया, हांरे परतिष्ठा ठाठ रचाया।
हांरे लुंपक मत रोक लगाया, हांरे जिनशासनझंड जमाया॥
हांरे गुरु धन अवतार-सद्० ॥ ६ ॥

खंभाते बीकाण में सुखकारा, हांरे वर ग्रन्थ सुरत्न भंडारा।
हांरे साहित्य किया विसतारा,हांरे गुरु ज्ञान क्रिया बल धारा॥
हांरे पूरे पंचाचार-सद्० ॥ ७ ॥

गुरु उपदेशें तीर्थ के संघ भारी, हांरे तीरथ तारे भवपारी
हांरे सिद्धाचलवर गिरनारी, हांरे आबू प्रमुखा उपकारी ॥
हांरे यात्रा हितकार--सद्० ॥ ८ ॥

सुखसागर हैं सद्गुरुभगवाना, हांरेपूजो सद्गुरुयुग परधाना
हांरेनिज जन्मकोसफलमनाना, हांरेहरिगुरुशासन ध्वज:माना
हांरे बोलो जय जयकार-सद्० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

दिल्लीश्वराकब्बर बोधि-युगप्रधान-
दादाभिधान सुगुरो जिनचन्द्रसूरेः।

पादारविन्दयुगलोत्तम दिव्यदेशे,
पुण्यध्वजं सुप्रति रोपयितास्मि भक्त्या ॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरीश्वराय ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥

---

* कलश *

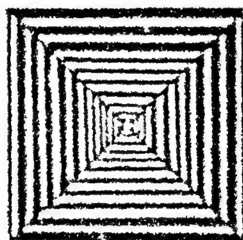
॥ दोहा ॥

गुरु भज निगुरापन तजो, गौरव चढ़े विशेष ।
उपकारी गुरुदेव हैं, दें गुण-ज्ञान हमेश ॥

(तर्ज – तेजतरणि सम राजे०)

पूजो जग जयकारी गुरु हैं पूजो जग जयकारी ॥ टेक ॥
तीर्थंकर विरहो जीवों को, धर्म बोध दातारी गुरु हैं० ।
देश विदेश विहारी स्वामी, उपकारी अवतारी गुरु हैं० ॥१॥
शासन सेवा खूब बजा कर— युगप्रधान पदधारी गुरु हैं० ।
नगर बीलाडे या वेणातट आये गुण अविकारी गुरु हैं० ॥२॥

अंत समय निज जान-त्रिविध कर अनशन भाव उचारी गुरु हैं।
परमेष्ठी वर ध्यान समाधि-हुए स्वर्ग अधिकारी गुरु हैं०॥३॥
आसोवद दिन दूज सोलहसो-सत्तर समय गुणधारी गुरु हैं०।
पंडित मरण महोत्सव किन्तु संघमें शोक अपारी गुरु हैं०॥४॥
सिंह समाना सूरीश्वर जिनसिंह-सुगुरु पटधारी गुरु हैं०।
धन कर्मेन्दु मंत्री धन गुरु, ज्योति जगति विसतारी गुरु हैं०५
अकबर शाह विशेष दयामय हुआ धम्म अधिकारी।
जन परभावक पूज्य परम गुरु भाव जयंती धारी गुरु हैं०॥६
खरतर गण नायक सुखसागर-सद्गुरु बलिहारी गुरु हैं०
गुरु भगवान भजो भवी भावें-भवोदधिपार उतारी गुरु हैं०॥७
संवत् गज निधि निध भू वर्षे-मोकलसर मनुहारी गुरु हैं।
श्रावण वद दिन दूज गुरु की-पूजा मंगलकारी गुरु हैं० ॥८॥
जिनहरि सागरसूरी गुरु गुण-गाये पावनकारी गुरु हैं०।
युगप्रधान जिनचन्द्र चरण कज, पूजा जय जयकारी गुरु हैं०९



❀ श्री ❀

चतुर्थ दादा

युगप्रधान—श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वर-सद्गुरु की

❊ आरती ❊

जय जय गुरु राया, पुण्योदय से पाया !
ॐ जय जय गुरु राया ॥ टेर ॥
अकबर भाव अहिंसक हेतु-सब जग सुखदाया ।
आरति गुरु गुण आरतिकारी-गावो तज माया ।
ॐ जय जय गुरुराया ॥ १ ॥
परम प्रभावक सद्गुरु श्रावक कर्म योग गाया ।
सिद्ध और साधककी जोड़ी-कार्य सिद्ध पाया ॥
ॐ जय जय गुरुराया ॥ २ ॥
ठाम ठाम गुरु थंभ विराजे-भवि पूजे पाया ।
जिनहरि पूज्य परमगुरु पूजो-पाओ मन चाह्या ।
ॐ जय जय गुरुराया ॥ ३ ॥

इति पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आबाल ब्रह्मचारी जैनाचार्य
श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचिता
श्रीचतुर्थ दादा गुरुदेव पूजा
समाप्ता

* ॐ *

दादा गुरुदेव की पूजा

(पहले स्थापना करके नीचे लिखा आह्वान का श्लोक पढ़ें)

॥ श्लोक ॥

सकलगुणगरीष्ठान्सत्तपोभिर्वरिष्ठान् ॥
शम दमयमयुष्टांचारुचारित्रनिष्टान् ॥
निखिल जगत पीठे दर्शितात्म प्रभावान् ॥
मुनिपकुशल* सूरीन्स्थापयाम्यत्रपीठे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त श्रीमणिधर जिनचन्द्र श्री जिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहाः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त, श्री मणिधर जिनचन्द्र, श्री जिन कुशल, श्री जिनचन्द्रसूरिः अत्र तिष्ठः ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं जिनदत्त, श्री मणिधर जिनचन्द्र, श्री जिनकुशल, श्री जिनचन्द्रसूरि गुरो अत्र मम सन्निहितो भववषट् (इति संनिधि करणं) ॥ ३ ॥

---

* अथवा दत्त, चंद्र

१ — अथ न्हवण पूजा

(स्नात्रिया शुचि होकर जल का कलश लेकर खड़ा होवे)

॥ दोहा ॥

ईश्वर जग चिन्तामणि, कर परमेष्ठी ध्यान।
गणधर पद गुण वर्णना, पूजन णरो सुजान ॥१॥
सौधर्म्मा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट।
मिथ्या मत तम हरन को, भव्य दिखावन बाट ॥२॥
सुस्थिति सुप्रतिबद्ध गुरु, सूरि मंत्र को जाप।
कोटिकियो जब ध्यानधर, कोटिक गच्छ सुथाप ॥३॥
दश पूर्व्वी श्रुत केवली, भये वज्रधर स्वाम।
ता दिन से गुरु गच्छ को, वज्रशाख भयोनाम ॥४॥
चन्द्रसूरि भये चन्द्रसम, अतिही बुद्धि निधान।
चन्द्रकुली सब जगत में, पसर्यो बहु विज्ञान ॥५॥
वर्द्धमान के पाट पद, सूरि जिनेश्वर भास।
चैत्यवासि को जीत कर, सुविहितपक्ष प्रकाश ॥६॥
अणहिलपुर पाटण सभा, लोक मिले तहाँ लक्ष।
खरतर विरुद सुधा निधि, दुर्लभ राज समक्ष ॥७॥
अभयदेवसूरि भये, नव अंग टीका कार।

थंभण पारस प्रगट कर, कुष्ट मिटावन हार ॥८॥
श्री जिनवल्लभसूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक।
प्रतिबोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥९॥
हुँबड़ श्रावक वागड़ी, अट्ठारे हजार।
जैन दया धर्मी किये, वरते जय जय कार ॥१०॥
दादा नाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास।
दत्त सूरि गुरु पूजतां, आनन्द हर्ष उल्लास ॥११॥
मदनपाल दिल्लीश ने, हुक्म उठाया शीस।
मणिधारी जिनचन्द गुरु, पूजों विश्वा बीस ॥१२॥
ताके पट्ट परम्परा, श्री जिनकुशलसुरिंद।
अकबर को परचा दिया, दादा श्री जिनचन्द ॥१३॥
ऐसे दादा चार को, पूजो चित्त लगाय।
जलचन्दन कुसुमादिकर, ध्वज सौगन्ध चढ़ाय ॥१४॥

(चाल—दादा चिरञ्जीवो)

गुरुराज तणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी लच्छि घणी ॥ टेर ॥ गुरुदत्त सुरिंद जग उपकारी, गुरु सेवक ने सानिधकारी। गुरु चरण कमलनी बलिहारी, गु० ॥ १ ॥ *संवत इग्यारे वार शशि, बत्तीसे जनम्या

* ११३२ चंद्रवार

शुभ दिवसी । श्रावक कुल हुम्बड ने हुलसी, गु० ॥ २ ॥ जसु वाछगसा पितु नाम भणे, वाहडदे माता हर्ष घणे । इकतालीसे दीक्षा पभणे, गु० ॥ ३ ॥ गुणहतरे वल्लभ पटधारी, गुरु माया बीजनो जाप करी । गुरु जग में प्रगट्या तरण तरी, गु० ॥ ४ ॥ मणिधारी जिनचन्द उपगारी, जिनदत्त सुरिंद के पटधारी । भये दादा दूजा सुखकारी, गु० ॥ ५ ॥ राशल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन शाता । दिल्लीपति शाह सुगुण गाता, गु० ॥ ६ ॥ जसु चौथे पाट उद्योतकरी, जिन-कुशलसुरिंद अति हर्ष भरी । ×तेरे सैंतीसे जनम धरी, गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्हा जनक जगत्र जियो, वर जैतश्री शुभ स्वप्न लियो । छाजेहड गोत्र उद्धार कियो, गु० ॥ ८ ॥ ÷धन सैंतालीसे दीक्षा धरी, जिनचन्द सुरीश्वर पाट वरी । गुणहतरे सूरि मन्त्र जापकरी गु० ॥ ९ ॥ सेवा में बावन वीर खरा, जोगनियाँ चौंसठ हुक्म धरा । गुरु जग में कई उपकार करा, गु० ॥ १० ॥ माणिकसूरीश्वर पद छाजे, जिनचन्द्रसूरि जग में गाजे । भये दादा चौथा

× ११३७ ÷ १३४७

सुखकाजे, गु० ॥ ११ ॥ जिन चाँद उगायो उजियालो, अम्मावस की पूनम वालो। सब श्रावक मिल पूजन चालो; गु० ॥ १२ ॥ जिन अकबर कों परचा दीना, काजी की टोपी वस कीना। बकरी का भेद कहा तीना, गु० ॥ १३ ॥ गंधोदकसुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सदगुरु चरण परी, या पूजन कवि 'ऋद्धिसार' करी, गु० ॥ १४ ॥

॥ श्लोक ॥

सुरनदीजलनिर्मल धारकैः ॥ प्रबलदुष्कृत-दाघनिवारकैः ॥ सकल मङ्गलवाँञ्छितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय । परमगुरुदेवाय । भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय । श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय । मणिमण्डित भालस्थल श्री जिनचन्द्र-सूरीश्वराय । श्री जिनकुशल सूरीश्वराय । अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय । जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥

२—अथ केशर चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केशर चन्दन मृगमदा, कर घनसार मिलाप ।
परचा जिनदत्तसूरि का, पूज्यां छूटे पाप ॥१॥

(चाल-बीन वाले की)

दीन के दयाल राज सार सार तूं ॥ टेर ॥ आये भरुअच्छनग्र धाम धूम धूं । बाजते निशान ठौर, हर्ष रंग हूं ॥ १ ॥ मुसलमान मुगलपूत; फौज मौज मूं । फौत मौत हो गया, हाय कार सूं ॥ २ ॥ सघ्न विघ्न देख आप, हुक्म दीन यूं । लाओ मेरे पास आस जीव दान दूं ॥ ३ ॥ मृतक पूत मंत्र से उठाय दीन तूं । देख के अचंभ रंग दास खास कूं ॥ ४ ॥ करत सेवा भाव पूर, तुरक राज जूं । छोड़ के अभक्ष खाण, हाजरी भरूं ॥ ५ ॥ बीज खीज के पड़ी, प्रतिक्रमण के मूं । हाथ से उठाय पात्र, ढांक दीन छूं ॥ ६ ॥ दामनी अमोल बोल, सिद्ध राज तूं । देऊं वरदान छोड़, बन्द कीन क्यूं ॥ ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप, करत नाहिं च्यूं । फेर मैं पड़ूंगी नाहिं छोड़ दीन फूं ॥ ८ ॥ करोंगे

निहाल आप, पाव पलक नूँ। राम ऋद्धिसार दास, चरण छाँह लूँ ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

मलयचन्दनकेशरवारिणाः निखिलजाड्य रुजात-पहारिणा ॥ सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं। कुशलसूरि-गुरोश्चरणौयजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय। परमगुरुदेवाय। भगव-तेश्री जिनशासनोद्दीपकाय। श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय। मणिमण्डित भालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय। श्री जिनकुशलसूरीश्वराय। अकबर असुरत्राणप्रतिबोध-काय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय। केशरचन्दनंनिर्विपामिते स्वाहा ॥२॥

३—अथ पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

चंपा चमेली मालती, मरुआ और मचकुन्द।
जो चाढ़े गुरुचरण पर, तिन घर होय आनन्द ।१।

राग माड

(चाल—नींद तो गई रे बादीला म्हारी)

गुरु परतिक सुरतरु रूप सुगुरुसम दूजो तो नहीं। दूजो तो नहीं, म्हारा चेतन दूजो तो नहीं, म्हारा चेतन

दूजो तो नहीं। गुरुपरतिखसुरतरुरूप, सुगुरुनें पूजो तो सही ॥ टेर ॥ चितौड़ नगरी वज्र खम्भ में, विद्या पोथी रही। मन्त्र यन्त्र विद्यासे पूरी, गुरुनिज हाथ ग्रही ॥१॥ पुर उज्जयनी महाकालके, मन्दिर थम्भ कही। सिद्धसेन दिनकर की पोथी, विद्या सर्व लही ॥ २ ॥ उज्जयनी व्याख्यान बीच में, श्राविका रूप ग्रही। जोगनियाँ छलने कूं आई, सबकूं कील दई ॥ ३ ॥ दीन होय जोगनियाँ चौसठ, गुरु की दास भई। सात दिया वरदान हरप सें, पसर्या सुयश मही ॥ ४ ॥ पुष्प-माल गुरु गुण की गूँथी, चाहो चित्त चही। कहे 'राम ऋद्धिसार' सुयश की, चूटी आप दई ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥

कमल चम्पक केतकी पुष्पकैं ॥ परिमलाहृतपट्पद-वृन्दकैं ॥ सकलमंगलवांच्छितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरो-श्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषायपरमगुरु-देवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरी-श्वराय, मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय, अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय पुष्पंनिर्वपामिते स्वाहा ॥३॥

४—अथ धूप पूजा

धूप पूज कर सुगुरु की, पसरे परिमल पूर।
यश सुगन्ध जग में बढ़े, चढ़े सवाया नूर ॥१॥

राग सोरठा

(चाल—कुबजाने जादू डारा)

अम्बिका विरुद बखाने, गुरुतेरो अम्बिका विरुद बखाने। तुम युगप्रधान नहीं छाने, गुरु तेरो ॥टेर॥
गढ़ गिरनारपे अम्बड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाने। युगप्रधान इस युग में कोई, देखूँ जन्म प्रमाने ॥ गु० १ ॥
कर उपवास तीन दिन बीते, प्रगटी अम्बा ज्ञाने। प्रगट होय कर में लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ २ ॥
या गुण संयुक्त अक्षर बाँचे, ताकूँ युगवर जाने। अम्बड़ मुलक मुलक में फिरता, सूरि सकल पतियाने ॥ ३ ॥
आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने। वासक्षेप कर ऊपर डाला, चेला बाँच सुनाने ॥ ४ ॥
सर्व देव हैं दास जिन्होंके, मरुधर कल्प प्रमाने। युगप्रधान जिनदत्तसूरीश्वर, अम्बड शीश झुकाने ॥ ५ ॥
उद्योतनसूरीने निज हाथ, चौरासी गच्छ ठानें। वह सब

तुमरी सेवा मारें, आन तुम्हारी मानें ॥ ६ ॥ भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्तन, कीनी ग्रन्थ प्रमाने । युगप्रधान प्रकीर्ण गंडिका, गणधर-पद-वृत्ति म्याने ॥ ७ ॥ जो जन तुमको भक्ति से पूजें, हों उनके मन माने । कहे 'राम ऋद्धिसार' गुरु की, पूजा धूप कराने ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

अगरचन्दन धूपदशांगजं ॥ प्रसरिताखिलदिक्षुसुधूम्रकं ॥ सकलमंगलवांछित दायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणांयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय, मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुर प्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय धूपंनिर्वपामिते स्वाहा ॥४॥

५—अथ दीप पूजा

॥ दोहा ॥

दीप पूजकर सुगुण नर, नित २ मंगल होत ।
उजियालो जग में करत, रहे अखंडित जोत ॥१॥

(राग—कलिगड़ा)

पूजन कीजोजी नर नारी, गुरु महाराज का हो ॥ टेर ॥ सिंधु देश में पंच नदी पर, साधे पाँचो पीर। लोई ऊपर पुरुष तिराये, ऐसे गुरु सधीर ॥ १ ॥ प्रकट होय कर पांच पीर ने, सात दिये वरदान। सिंधु देश में खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥ २ ॥ सिंधु देश मुलतान नगर में, बड़ा महोत्सव देख। अम्बड चैत्यवास का श्रावक, गुरु से कीना द्वेष ॥ ३ ॥ अणहिलपुर पत्तन में आओ, तो मैं जानूं सच्चा। धर्म ध्वजा फहराते आवें, देख लीजियो बच्चा ॥ ४ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा, डंका धर्म बजाया। निर्धन अम्बड़ सन्मुख आया, अहंकार फल पाया ॥ ५ ॥ मन में कपट किया अंबड़ ने, खरतर महिमाधारी। जहर दिया उन अशन पान में, गुरु विधि जानी सारी ॥ ६ ॥ भणसाली सुखत्तर श्रावक से, निर्विष मुंद्री मंगाई। जहर उतारा तब लोगों में, अंबड़ निन्दा पाई ॥७॥ मरकर व्यन्तर हुआ वो अंबड़, रजोहरण हर लीना। भनशाली व्यन्तर वचनों से, गोत्र उतारा कीना ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु ओघा लेकर, गोत्र बचाया सारा। 'ऋद्धिसार' महिमा सद्गुरु की, दीपक का उजियारा ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

अतिसुदीप्तमयैंखलुदीपकैः ॥ विमलकंचन भाजनसंस्थितै ॥ सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरौश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय । भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय । श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय, मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्री जिनकुशलसूरीश्वराय । अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय दीपंनिर्विपामिते स्वाहा ॥ ५ ॥

६—अथ अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा गुरुतणीं, करो महाशय रंग ।
क्षति न होवे अंग में, पाओ सुक्ख अभंग ॥

(राग—आसावरी)

रतन अमोलक पायो; सुगुरु नाम रतन० । गुरु संकट सब ही मिटायो ॥ टेर ॥ विक्रमपुर नगरी लोगन को, हैजा रोग सतायो । बहुत उपाय किया शांति का, लग फरक नहिं आयो ॥ १ ॥ योगी जंगम सब संन्यासी, देवी देव मनायो । फरक नहीं किसी ने

कीना, हाहाकार मचायो ॥ २ ॥ रतन चिंतामणि सारिखो साहिब, विक्रमपुर में आयो। जैन संघ का कष्ट दूर कर, जय जयकार करायो ॥ ३ ॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण; सब ही शीस नमायो। जीवितदान करो महाराजा, गुरु तब यों फरमायो ॥ ४ ॥ जो तुम समकित व्रत को धारो, अबही करदूं उपायो। तहत्त वचन कर रोग मिटायो, आनन्द हर्ष वधायो ॥ ५ ॥ जो कोई श्रावकव्रत को न धार्यो; पुत्री पुत्र चढ़ायो। साधु पाँचसौ दीक्षित कीना, साधवियाँ समुदायो ॥ ६ ॥ मंत्र कला गुरुअतिशय धारी, ऐसो धर्म दिपायो। 'ऋद्धिसार' पर कृपा कीनी, सांचो पथ बतलायो ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥

सरल तंदुलकैरति निर्मलैं। प्रवरमौक्तिक पुञ्जवदुज्वलैः ॥ सकलमंगलवाँञ्छितदायकं। कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजेः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय। परमगुरुदेवाय। भगवतेश्री जिन शासनोद्दीपकाय। श्री जिनदत्तसूरीश्वराय। श्री जिनकुशलसूरीश्वराय। अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय अक्षतं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ६ ॥

७—अथ नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव।
गुरुगुण अगणित किम गिने, गुरुभव तारणनाव। १ ।

राग—कल्याण

(चाल—तेरी पूजा बणी है रस में)

हो गुरु किया असुर को वश में ॥ टेर ॥

वड़नगरी में आप पधारे, सामेला धसमस में। ब्राह्मण लोग करी पञ्चायत, मिलकर आया गुसमें ॥ १ ॥ महिमा देख सके नहीं गुरु की, भर गये वह तो गुस में। मृतक गऊ जिन मन्दिर आगे, रख दी सन्मुख चस में ॥ २ ॥ श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरु से कसमें। चिंता दूर करो है संघ की, गऊ उठ चाली इस में ॥ ३ ॥ मरी गऊ को जीती कीनी लोक रहे सब हँस में। जाके गाय पड़ी रुद्रालय, संघ भया सब खुश में ॥ ४ ॥ ब्राह्मण पांव पड़े अब गुरु के, देख तमाशा इसमें। हुक्म उठावेंगे सिर ऊपर, तुम संतति की दिश में ॥५॥ नमस्कार है चमत्कार को, कीनी पूजा रस में। कहे 'राम ऋद्धिसार' गुरु की, आनन्द मंगल यशमें ॥ ६ ॥

जिनकुशलसूरीश्वराय । अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय फलंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥८॥

९—अथ वस्त्र छत्र पूजा

॥ दोहा ॥

वस्त्र छत्र गुरु पूजना, चोवा चन्दन चंपेल ।
दुश्मन सब सज्जन हुए, करे सुरंगा खेल ॥१॥

देशी

(चाल—मनडो किमही न वाजे)

लक्ष्मी लीला पावेरे सुन्दर, ल० । जे गुरु वस्त्र चढ़ावेरे सुन्दर, ल० ॥ सुयश अतर महकावेरे सुन्दर, ल० । दुश्मन शीस नमावेरे सुन्दर, ल० ॥ टेर ॥ दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबन खतरे आवे । साचे मन सुमरे सद्गुरुको, दुःख की टेर सुनावेरे सुन्दर ॥ १ ॥ वाचंता व्याख्यान सूरीश्वर, पर्चारूपे थावे । जाय समुद्र में जहाज तिरायो, फिर पीछा जब आवेरे सुन्दर ॥ २ ॥ पूछे संघ अचरज में भरिया, गुरु सब बात सुनावे । ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावेरे सुन्दर ॥३॥ बोथरा सूजमल श्रावक को, दादा कुशल तिरावे ।

सुखसूरि गुरु समयसुन्दर का, जहाज अलोप दिखावेरे ॥ ४ ॥ बारहसौ इग्यारे [1]दत्तसूरी, अजमेर अणसण ठावे। उपज्या सौधर्मा देवलोके, श्रीमंधर फरमावे रे सुन्दर ॥ ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगर में जावे। ऐसे दादा दत्त सूरीश्वर, तारण तरण कहावे रे सुन्दर ॥ ६ ॥ मणिधारी दिल्ली में पूज्यां, संकट सपने न आवे। रथी उठी नहीं[2] देख नरेश्वर, वाँही चरण पधरावेरे सुन्दर ॥ ७ ॥ कुशलसूरी देराउर नगरे, भुवनपति सुर थावे। [3]फागुन वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरश दिखावेरे सुन्दर ॥ ८ ॥ जल चन्दन फल फूल मनोहर, आठों द्रव्य चढ़ावे। वस्त्र इतर पूजा सद्गुरु की, 'ऋद्धि-सार' मन भावे रे सुन्दर ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

अखिल हीर शुचिः नवचीरकं। प्रवर भावरणं खलु गंधतः। सकलमंगलवाँच्छितदायकं। कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय

---

[1] १२११ संवत विक्रमीय आषाढ़ शुक्ला ११

[2] भाद्रपद कृष्णा १४ वि० सं० १२२३

[3] वि० सं० १३८८ फागुन कृष्णा ३०

जिनकुशलसूरीश्वराय । अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय फलंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥८॥

६—अथ वस्त्र छत्र पूजा

॥ दोहा ॥

वस्त्र छत्र गुरु पूजना, चोवा चन्दन चंपेल ।
दुश्मन सब सज्जन हुए, करे सुरंगा खेल ॥१॥

देशी

(चाल—मनडो किमही न बाजे)

लक्ष्मी लीला पावेरे सुन्दर, ल० । जे गुरु वस्त्र चढ़ावेरे सुन्दर, ल० ॥ सुयश अतर महकावेरे सुन्दर, ल० । दुश्मन शीस नमावेरे सुन्दर, ल० ॥ टेर ॥ दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबन खतरे आवे । साचे मन सुमरे सद्गुरुको, दुःख की टेर सुनावेरे सुन्दर ॥ १ ॥ वाचंतां व्याख्यान सूरीश्वर, पर्वोरूप थावे । जाय समुद्र में जहाज तिरायो, फिर पीछा जब आवेरे सुन्दर ॥ २ ॥ पूछे संघ अचरज में भरिया, गुरु सब बात सुनावे । ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावेरे सुन्दर ॥३॥ बोथरा गूजरमल श्रावक को, दादा कुशल तिरावे ।

सुखसूरि गुरु समयसुन्दर का, जहाज अलोप दिखावेरे ॥ ४ ॥ बारहसौ इग्यारे [1]दत्तसूरी, अजमेर अणसण ठावे । उपज्या सौधर्मा देवलोके, श्रीमंधर फरमावे रे सुन्दर ॥ ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगर में जावें । ऐसे दादा दत्त सूरीश्वर, तारण तरण कहावे रे सुन्दर ॥ ६ ॥ मणिधारी दिल्ली में पूज्यां, संकट सपने न आवे । रथी उठी नहीं[2] देख नरेश्वर, वाँही चरण पधरावेरे सुन्दर ॥ ७ ॥ कुशलसूरी देराउर नगरे, भुवनपति सुर थावे । [3]फागुन वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरश दिखावेरे सुन्दर ॥ ८ ॥ जल चन्दन फल फूल मनोहर, आठों द्रव्य चढ़ावे । वस्त्र इतर पूजा सद्गुरु की, 'ऋद्धिसार' मन भावे रे सुन्दर ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

अखिल हीर शुचिः नवचीरकं । प्रवर प्रावरणं खलु गंधतः । सकलमंगलवाँच्छितदायकं । कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय

[1] १२११ सम्वत विक्रमीय आषाढ़ शुक्ला ११

[2] भाद्रपद कृष्णा १४ वि० सं० १२२३

[3] वि० सं० १३८६ फागुन कृष्णा ३०

भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय। श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय। श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय। अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय वस्त्रं चोवा चन्दनं पुष्पं फलं निर्विपामिते स्वाहा ॥ ६ ॥

१०—अथ ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

ध्वज पूजा गुरुराज की, लहके पवन प्रचार।
तीन लोक के शिखर पर, सो पहुंचे नर नार ॥ १ ॥

॥ श्री राग ॥

(चाल—जिनगुणगानं श्रुति अमृतं)

ध्वज पूजन कर हरख भरी रे, ध्वज०। टेर। सज सोलह शृङ्गार सहेल्यां, श्री सद्गुरु के द्वार खड़ी रे। अपछर रूप सुतन सुकुलीनी, ठम-ठम पग झणकार करी रे ॥ १ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षिणा, धन-धन आनन्द आज घड़ी रे। निर्धनको लक्ष्मी वखसावत, पुत्र विना जाके पुत्र करी रे॥ २ ॥ जो जो परतिख परचा देखा सुणो भविक चित चाव धरीरे। फतहमल्ल भड़गतिया

श्रावक, पहली शंका जोर करीरे। ३। देखूं परतिख तब मैं जानूँ, प्रगट्या तत्क्षण तरण तरीरे। पुष्पमाल सिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाक करीरे ॥ ४ ॥ 'मांग मांग वर' बोले वानी, फरक बताओ गुरु मेघ झरीरे। फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्य हरीरे ॥ ५ ॥ ज्ञानचन्द गोलेच्छा को गुरु, प्रत्यक्ष दीना दरस फरीरे। बीकानेर मे थुंभ तुम्हारा, चित्र करावत सुरसुन्दरीरे ॥ ६ ॥ थानमल्ल लूनियाँ पर किरपा, लक्ष्मी लीला सहज वरीरे। लक्ष्मीपति दूगड़ की साहित्र हुण्डी की भुगतान करीरे ॥७॥ जो उपकार करा तुम मेरा, दोनो सन्मुख अमृत जड़ीरे। तेरी कृपा से सिद्धि पाई, जागे यश अरु भागे मरीरे ॥ ८ ॥ भूखा भोजन तिसियाँ पानो, भरत हाजरी देव परीरे। विपम समय पर सहाय हमारे, 'ऋद्धिसार' की गरज सरीरे ॥९॥

॥ श्लोक ॥

मृदु मधुर ध्वनि किङ्कणी नादकैः, ध्वज विचित्रित-चित्तचमत्कृतकैः। सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं, कुशलसूरि-गुरोश्चरणांयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय। परम-

गुरुदेवाय। भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय। श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय। मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय। श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय। अकबर असुरत्राण-प्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा ॥ १० ॥

११—अथ अर्घ पूजा

॥ दोहा ॥

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द।
कंठ विराजे सरस्वती, जग में श्रीजिनचन्द ॥१॥

(राग – आसावरी तथा धन्याश्री)

पूजन जग सुखकारी सुगुरू तेरी पूजन०।
तेरे चरण कमल बलिहारी सुगुरू० ॥ टेर ॥
साह सलेम दिल्ली को बादशाह, सुनी है शोभा तिहारी।
भट्ट हरायो चर्चा करके, भट्टारक पदधारी ॥ १ ॥
अम्मावस की पूनम कीनी, चन्द उगायो भारी।
चढ़के गगन करी है चर्चा, सूरज से तपधारी ॥ २ ॥
*उगणीसो चौदह संवत में, लखनऊ नगर मझारी।
गोरा फिरंगी टोपी वाला, दिल में ये बात विचारी ॥३॥
श्वेताम्बर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी।

वाणी निकली सौ वर्षों तक, होवेगा अधिकारी ॥ ४ ॥
अंधे की खोली आंख स्वरत में, पूजे सब नरनारी।
कहां लग गुण वरनूं मैं तेरा, तू सुरतरु जयकारी ॥ ५ ॥
उगणीसौ संवत्सर त्रेपन, मंगासिर मास मंझारी।
शुक्ल दूज जिनचंद सूरीश्वर, खरतर गच्छ आचारी ॥ ६ ॥
कुशलसूरि के निज संतानी, क्षेमकीर्ति मनुहारी।
प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पांच सौ, ज्ञानसहित अणगारी ॥ ७ ॥
क्षेमधाड शाखा जब प्रगटी, जग में आनन्दकारी।
धर्मशील साधु गुण पूरे, कुशलनिधान उदारी ॥ ८ ॥
ये पूजन करतां सुख आनंद, अन्न धन लक्ष्मी सारी।
कहत 'रामऋद्धिसार' गुरु की, जय २ शब्द उचारी ॥६ ॥
सुगुरु तेरी पूजन जग सुखकारी ॥

(यह पूजा पढ़कर चारों दिशा में अर्घ दीजिये)

अथ आरती

जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल सेवा। आनन्द सुख लेवा, जय जय गुरुदेवा ॥ टेर० ॥ एक व्रत, दोय व्रत, तीन चार व्रत, पंचमव्रत सोहे। भविक जीव निस्तारण, सुरनर मन मोहे ॥१॥ दुःख दोहग सब हरकर

सद्गुरु, राजन प्रतिबोधे। सुत लक्ष्मी वर देकर, श्रावक कुल सोधे ॥२॥ विद्या पुस्तक धरकर सद्गुरु, मुगल पूत तारे। वस कर जोगण चौंसठ, पाँच पीर सारे ॥३॥ बीज पड़ंती वारी सद्गुरु, समन्द जहाज तारी। वीर किये वस बावन, प्रगटे अवतारी ॥ ४ ॥ जिनदत्त जिनचंद कुशल सुरीश्वर, खरतर गच्छ राजा। चौरासी गच्छ पूजें; मन वंछित ताजा ॥ ५ ॥ मन शुद्ध आरती कष्ट निवारन, सद्गुरु की कीजें। जो मांगे सो पावे, जग में यश लीजै ॥ ६ ॥ विक्रमपुर में भक्त तुम्हारो मंत्र कलाधारी। नित उठ ध्यान लगावत मनवंछित फल पावत, 'रामऋद्धि सारी' ॥ ७ ॥

मङ्गल दीपक

मंगल दीपक गुरु का कीजे, मन वंछित फल कारज सीझे ॥ मं० टेर ॥ मंगल दीप मंगल अडभासे, घर घर मंगल भाव प्रकाशे ॥ मं० २ ॥ करे करावे मङ्गलमाला, अन धन लक्ष्मी लहे सुविशाला ॥मं० ३॥ अलिय विघ्न मंगल दीवो, ऋद्धिसार भविजन चिरंजीवो ॥मं० ४॥

दानदाता सूची

५००१)	श्री मणिलालजी डोसी	दिल्ली
२१०१)	श्रीमति चन्दन बहन पुनमचन्दजी भंसाली	मद्रास
२००१)	श्री पदमचन्दजी बोथरा	कलकत्ता
१५०१)	„ शांतिबाई रेखचन्दजी गोलेच्छा	कुडलूर
१००१)	„ वंशराजजी रिखबचन्दजी	गढशिवाना
१००१)	„ राणूलालजी कोठारी	जबलपुर
१००१)	„ कांतिलालजी धनराजजी छाजेड़	बालोतरा
७०१)	„ रजनीकांत चन्दुलाल शाह	अहमदाबाद
५०१)	„ बाबूभाई भोगीलाल पटवा	अहमदाबाद
५०१)	„ माणकलाल बालाभाई झवेरी	अहमदाबाद
५०१)	„ जीतमलजी राजमलजी	गढशिवाना
५०१)	„ मुणालचन्दजी भीमराजजी बालड़	गढशिवाना
५०१)	„ विजयलालजी केशरीचन्दजी पारख	जगदलपुर
५०१)	„ भँवरलालजी ललितकुमारजी गोलेच्छा	बम्बई
५०१)	„ जीवराजजी अगरचन्दजी गोलेच्छा	फलोदी
५०१)	„ हीराचन्दजी जुगराजजी पारखतिवरी वाले	जोधपुर
५०१)	अ० सौ० सितावदेवी राजरूपजी टांक	जयपुर
५०१)	श्री [illegible] चन्दजी घटोड़	मद्रास
५०१)	„ केशरीमलजी बापूलालजी बैद मेहता	खाचरोद
५०१)	„ मांगीलालजी छाजेड़	खाचरोद
४०१)	„ उमेदचन्दजी बागमलजी नाहटा	अहमदाबाद
३५१)	„ मनोहरलालजी फूलचन्दजी बाफणा	संधारा
३०१)	„ अभयराजजी धनराजजी लुणिया	इन्दोर

३०१)	,, चम्पालालजी जेठमलजी श्रावक	बड़ोदा
३०१)	,, चन्दुलाल मलुकचन्द	अहमदाबाद
३०१)	,, नगिनदास दलसुखराय	अहमदाबाद
३०१)	,, चम्पालालजी मोहनलालजी वालड़	सणपा
३०१)	,, रामलालजी भँवरलालजी हरणेचा	सिणंधरी
३०१)	,, मिश्रीमलजी ओमप्रकाशजी मन्डोवरा	सिणंधरी
३०१)	,, रिखवचन्दजी अचलचन्दजी रांका	गढशिवाना
२५१)	श्री लक्ष्मणराज जी मेहता	जोधपुर
२०१)	अ० सौ० आशादेवी नेमीचन्दजी पड्या	बाड़मेर
२०१)	श्री जीवणमलजी हस्तीमलजी धाड़िवाल	बाड़मेर
२०१)	,, बुद्धमलजी वस्तीमलजी कान्टे८	समदड़ी
२०१)	,, भूरचन्दजी कांतिलालजी संकलेचा	अहमदाबाद
२०१)	,, अरविन्द भाई बापालाल दलाल	अहमदाबाद
२०१)	अ० सौ० छगनी बाई नेमीचन्दजी धाड़िवाल	बाड़मेर
२०१)	श्री नेमीचन्दजी गुलाब चन्दजी भंसाली	अहमदाबाद
२०१)	,, देवीलालजी दलीचन्दजी मणोत	भीलवाड़ा
२०१)	,, उदयराज ज्ञानचन्द	अहमदाबाद
२०१)	,, कान्तिलाल मोहनलाल एण्ड कम्पनी	अहमदाबाद
२०१)	,, रामलाल मिश्रीलाल लोढा	दुर्ग
२०१)	,, सोनकरण राजेन्द्रकुमार मरोटी	दुर्ग
२०१)	,, चूनीलालजी चम्पालालजी कोठारी	दुर्ग
२०१)	,, रसिकलाल चन्दुलाल कोठारी	अहमदाबाद
२०१)	,, केशरीमल धनराज वंकू चोपड़ा	गढशिवाना
२०१)	,, वंशराजजी भँवरलालजी	सिणंधरी
२०१)	,, कुनणमलजी लूणकरणजी मेहता	इन्दोर
२०१)	,, लालचन्दजी अमोलकचन्दजी बोहरा	रामगंजमन्डी
१५२)	,, बाबूलालजी सूंकड़	धानरोद
१०१)	श्रीमति प्रभावती बहन मुकुनराज गान्धी	अहमदाबाद
१०१)	श्री रतिलाल मणिलाल कोठारी	अहमदाबाद

१०१)	अ० सौ० रमकूबाई मुन्नालालजी नाहटा	मुंगेरा
१०१)	अ० सौ० पुष्पाबाई बाबूलाल गोलेच्छा	गढशिवाना
१०१)	श्रीमति शारदा बहन चम्पकलाल शाह	अहमदाबाद
१०१)	श्री कांतिलाल मगनलाल	अहमदाबाद
१०१)	,, मन्नू भाई कांति भाई	अहमदाबाद
१०१)	,, विमल कुमारजी मन्नालालजी चोरडिया	भानपुरा
१०१)	,, बाबूभाई बापालाल दलाल	अहमदाबाद
१०१)	,, चन्दनमलजी बालचन्दजी बोथरा	उटकमन
१०१)	,, मोहनलालजी शिवचन्दजी शाह	भुज
१०१)	,, भँवरलालजी लक्ष्मणदासजी लुणिया	बाड़मेर
१०१)	,, सुल्तानमलजी लूणकरणजी संकलेचा	बाड़मेर
१०१)	,, कन्हैयालालजी चोपड़ा	खाचरोद
७१)	,, केशवलालजी जीवराजजी	अहमदाबाद
५१)	,, हरखचन्दजी किशनलालजी नाहर	भानपुरा
५१)	,, प्रसन्नचन्दजी मन्नालालजी चोरड़िया	भानपुरा
५१)	,, शोभागमलजी रतनचन्दजी चोरड़िया	भानपुरा

प्राप्ति स्थान :

प्रकाश, दूकान नं० २८
९ बी, एस्प्लेनेड रो (ईस्ट)
धर्मतल्ला मार्केट,
कलकत्ता-६९

प्रकाश कुमार, अशोक कुमार दफ्तरी
दफ्तरी मोहल्ला,
बीकानेर (राजस्थान)

श्री दादा गुरु का संक्षिप्त परिचय

	प्रथम दादा श्री जिनदत्त सूरि	द्वितिय दादा श्री जिनचन्द्र सूरि	तृतीय दादा श्री जिनकुशल सूरि	चतुर्थ दाद श्री जिन चन्द्र सूरि
जन्म सम्वत्	११३२	११९७	१३३७	१५९५
जन्म गाव	धोलका	विक्रमपुर	गढ़ सिवाणा	स्वेतसर
जन्म नाम	सोमचन्द	सूर्यकुमार	करमण	सुलतान
माता का नाम	वाहड देवी	देल्हणदे	जयतश्री	श्रियादेवी
पिता का नाम	वाछिग सासंश्री	रासल	जेसल	श्रीवंत
गोत्र	हुंबड	महतीयाण	छाजेड	रिहड
दिक्षा संवत्	११४१	१२०३	१३४७	१६०४
गुरु का नाम	श्री जिनवल्लभ सूरि	श्री जिनदत्त सूरि	श्री कलिकाल केवली जिनचंद्रसूरि	श्री जिन माणिक्यसूरि
आचार्यपद सं.	११६९	१२०५	१३७७	१६१२
स्वर्गवास सं.	१२११	१२२३	१३८९	१६७०
स्वर्ग भूमि	अजमेर	दिल्ली	देराउर	बिलाडा
स्वर्ग तिथि	आषाढ शुक्ल-११	भाद्रपद कृष्णा-१४	फाल्गुन शुक्ल-३०	अश्विन कृष्णा-२